* श्रीगणेशायनमः *

श्री

संतसुखप्रकाशिका पदावली

श्री १०८ श्रीअयोध्याजी लक्ष्मणकोट निवासी श्रीमद्तरणतारण स्वामी युगलानन्यशरण जी महाराज संग्रहीत ।

जिसमें

संतों के सुखदेने वाले पद अति उत्तमतासे वर्णित हैं।

जिसको

श्रीयुत स्थानाधिपति महन्त लषनलाल जी शरण की आज्ञानसार

पं० रामरत्न वाजपेयी

प्रिंटर व प्रोप्राइटर व पब्लिशर के प्रबन्ध से

लखनऊ स्टीम प्रिंटिङ्ग प्रेस लखनऊ में छपी ।

सन् १९१७ ई० ।

प्रथमबार] [२०००

महर्षि ... 167 ...

श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥

संतसुखप्रकाशिकापदावली प्रारम्भः

॥ पद ॥

नमो श्रीसतगुरु सुखराशी ॥ जिनके पदपंकजरज शिरधरि कटत कालफांसी । अमल कोमल पियूषसानी ॥ सुनत श्रवण बानी । छूटत छल छोभ लोभ प्रानी ॥ कृपा कमनीय नेकु कीजै । भवनिधि अगम अथाह मांझ मञ्जत कर महिलीजै ॥ अरज अंतरयामी सुनिये । युगलअनन्य शरन जन दरशन दै दिल दुख धुनिये ॥ १ ॥ नमो श्रीगुरु करुनाबानी । बारबार बलिहारि जाउँ लोचन लखि द्युतिदानी ॥ खेत हियेहेत नित्तहानी । अति उदार शीतल सुभाव बरषाइये रुचिपानी ॥ विपुल बासर बीते स्वामी । सहत कदंब ताप संसृति करि क्रूरसंग कामी ॥ छमा अपराध किये गहिये । युगलअनन्य शरन मेरो तूं बेशक सुख कहिये ॥ २ ॥ बधाई गुरु पूरनमासी । बजवाइये विनोद सहस संयुत सजि रुचि खासी ॥ दीजिये दान सु धनरासी । साधु विप्र सुर धेनु क्षुधित जन परतोषिये आसी ॥ सुदिनहिं आज सदृश दूजो । भलीभांति उमगाय हृदै गुरु मूरति पट पूजे ॥ हिये उत्साह दाहहारी । युगलअनन्य शरन रीझत श्रीगुरु रघुपति प्यारी ॥३॥ सकलविधि से सो बड़भागी । जाकी रतिमति निरत

निरंतर गुरु पदरज लागी ॥ सोहावन गुरु उत्सव कारी । अना-
यास पावै प्रमोद मिलि सियबर हियहारी ॥ निछावर करैं हरषि
नितही । तन मन जन गुन ज्ञान जहांलौ सुखसंपति तितही ॥
कहा कहौं महिमा श्री गुरुकी । युगलअनन्य शरन संतत चाहत
छबि प्रभु पुरकी ॥ ४ ॥ प्यायाकर प्रेम प्रान प्रीतिमें रिझाया कर
खायाकर खौफ खाम काम न मिटायाकर । ताया कर तीन पीन
झीनता समायाकर राघबीय बोध पाय चित्त चल चितायाकर ।
सायाकर सरसमोद मेह न बरसायाकर रशिकन मिलि मौज फौज
मानमद मलायाकर । रायाकर रंकशंक बंकको नसायाकर सीता-
पति शरन आय और नहिं मनायाकर ॥ दायाकर हरदम दिलखूब
रंगरूपमांझ आशकहो भोर सांझ इस्कको कमायाकर । मायाकर
दूर नूर नेहजी जमायाकर युगल अनन्य रुच्छ भाव तुच्छ मत नसा-
याकर ॥ ५ ॥ खुले सखि आज हमारेभाग ॥ आये मनभाये छाये
सुख दरशाये अनुराग । निवछावर करिहौं प्रीतमपर लोकलाज
जगबांग ॥ बिरह व्यथा बीती बहुदिन की सरस्योसरस सोहाग ।
युगलअनन्य अली सफलित सब जप तप व्रत सुरयाग ॥ ६ ॥
लगनियारे लागी सियपिय साथ ॥ रोम रोम रस रतिचाहत चित
सोउ प्रीतम के साथ । उर उमंग छन छन नूतननित गावत गुन
गनगाथ ॥ कैसे दाह दहे नेही जन जेहि सहांय सिरनाथ । बसिये
युगलअनन्य शरनमन लिये कर सर धनुभाथ ॥ ७ ॥ निर्मोहोसे
नेहलगाय सुख कहो कौन लह्यो । चातक चारु चकोर मोर मधु
पहु मृगदरद दह्यो ॥ चितवन चोट चलावत छन छन तनमन सुध
न बह्यो । युगलअनन्य कहौं कासे दुखसुख समशीशसह्यो ॥ ८ ॥
ललनमोरी कैसे धौं निबहै प्रीत मेरी कुल करनी विपरीत ॥ गुन
योबनसेवा रसजस बिनु दिन दिन दुगुन अनीत । युगलअनन्य

अलीअपनाइये लखि निज नाम पुनीत ॥९॥ बालम मोरा मेहरदर-
साजा। जीवन जान प्रान निवछावर आके चितवनि रसप्याजा॥
रोम रोम रगरग गैहैं गुनगन वर बचन सुनाजा। युगलअनन्य
अली लोनी छबि बूंद विमल बरसाजा॥ १०॥ चैती॥ पियकी
सुरतिया प्यारी। मन्साह समानी मोरेरामा॥ सरयूतर तीर
बिहारी लखि होश हिरानी मोरेरामा। बोलनि चितवनि हिय-
हारी जुल्फन छबिखानी मोरेरामा॥ चहूंओर सखी सजवारी
गावैं गुन सुख सानी मोरेरामा। युगलअनन्य बिहारी उर रंग
रसदानी मोरेरामा॥११॥ जपिये जीवन धनप्यारो निजनाम अनूप
मोरे हे रामा। खपिये न जगत जसमाहीं सब सुख लखि खारी
मोरेरामाहो॥ मनमें हमेश हुशियारी साजि नाम उचारी मोरेरामा।
युगलअनन्य अनूठी रस रीति बिचारो मोरेरामा॥ १२॥ प्यारे
इत उतकी फिकिरि बिसारो। जस जिकर जमाय मोरेरामाहो॥
बहु बचन रचन तम त्यागो रागो गुन नाम मोरे रामाहो। सिय
पिय प्रभाव उरआनो जग जाल मोरेरामाहो॥ संतोष तखतपर
बैठो पैठो सुख सिंधु मोरेरामाहो। जिय युगलअनन्य जो गाई
पाई प्रभु प्रीति मोरेरामाहो॥ १३॥ अन्यरीति॥ सबदिन ऐसे-
ही बीतैंगे॥ सियवर विशद विलास विभव गुन गुनत जंग जग
जीतैंगे। लौकिक काज समाज विषम विष बिरस बास घर रीतैंगे॥
संत सजग सुखवंत संग सजि शोक शहर रुचि चीतैंगे। युगल
अनन्य शरन सु नामरमि काल करालन भीतैंगे॥ १४॥ दरसत
रूप न विनवां परसत पियधाम। करषत काम वाम ममता मल
हरषत लखत सुदिनवां॥ तरसत रहत माधुरी लखि लखि चाखि
चखि रहस सुझिनवां। युगलअनन्य शरन तलफत चित अनत
होत जिमि मिनवां॥ १५॥ मोहिदहु मिलाय छबिनिधि मेरी स-

खियां । तपित रहत आकुल पलपल पर पिय भेटें बिन आँखियां ॥ हौंअतिहीन छीन सुदीन इमि जिमि पंखी बिन पँखियां । युगल अनन्य शरन आसागहि जियत मरत अगुरखियां ॥ १६ ॥ आजा परम पियरवा हमरे घर आज । लोचन पंथ पंसारि निहारत रहत न तनक सँम्हरवा ॥ सीखी कहां कठिनता ऐसी रशिक जनन हियहरवा । युगलअनन्य अली मिलिये अब मेटिये काल कहरवा ॥ १७ ॥ रसनिधि रसिया रहस सरसैयोहो । मृदु मुशक्यांन मनोहरता मुद बुंद विशद बरसैयोहो ॥ निजजन जानि जान जीवन तन तपित नहीं तरसैयो हो । युगुल अनन्य अली आतुर उर पद पंकज परसैयो हो ॥ १८ ॥ बिलग जनिहोइयो हो पलहूं प्यारे ॥ सजनी सिय सुंदरी संग सुख सेज सोहावन सोइयो हो । युगलअनन्य अली मदमत्त दृग दोउ दिलवर छबि जोइयो हो ॥ १९ ॥ निठुरपन प्यारे उचित न लागे । तुम बिन छन छन छैल छबीले मिलन मनोरथ जागे ॥ दृग देखन दी दरद दिवानी दिल दुसमन दिन दागे । युगलअनन्य अली अपनी लखिके कारन तृन त्यागे ॥ २० ॥ सब विधि बालम मोहि हितैहौ हो । हारि रही सखियन से पल पल कल बल सहित जितैहौ हो ॥ दिल अंदर दुशमन जेते मम तिनको सदा सतैहौ हो । युगलअनन्य शरन अछली लखि चितवन चारु चितैहौ हो ॥ २१ ॥ बिरह की आगिआ वेगि बुझैहौ हो ॥ सरस सुयोग बूंद बरसा के सूरति सजन सुझैहौ हो । युगलअनन्य सनेह समर सनमुख कब मोहि जुझैहौ हो ॥ २२ ॥ पल पल प्रीतम प्यारी रिझैहौ हो । सुंदर रंग बरसतहीं रहिहौ कैसेहु नाहिं खिझैहौ हो ॥ मधुर मधुर वर बचन सुनैहौ अंग अंग रस न भिजैहौ हो । युगलअनन्य अली श्रमबस ताकि छकि पद पदुम मिजैहौ हो ॥ २३ ॥ हेरोरी

साखि श्याम सजन को ॥ बन बन बिरह व्यथा व्याकुल है रहस यही बिरही के भजन को । छन छन नवल नेह नूपुर धुनि सुनिय सोहावन हियरे रंजन को ॥ मिले बिना महबूब मिलापी हम सब कहनहिं काज जजनको । युगलअनन्य पाय प्रीतम पद काहू भांति न मीत तजन को ॥ २४ ॥ लेगयो चित चाह चखन में ॥ अजूब अदा अलबेली देखाकर डारदियो दिलदार दूखन में । सांची बात समुझ सजनी नहिं काम रह्यो कुलकान रखनमें ॥ सुंदर श्याम राम दरशन बिन काजन तिल निकसेरी झखन में । युगल अनन्य शरन निवछावर है गइ ललचौहैं लखन में ॥ २५ ॥ प्यारे हमारे रँगीले रघुबर दिलदार । मोहन मदन बदन द्युति दमकन चमकन चलन बहार ॥ तोरन तार तीन ताना तन सदा सनातन सार । मोरन मन मन मथ मरदन करि छोरन कुल परिवार ॥ जोरन जिय जीवन रस बसकरि कुदरत अगम अपार । युगल अनन्य शरन जीवन धन पल पल प्रान अधार॥ २६ ॥ निरमोहिया से लागी लगनियारे ॥ जागत यतन युगुति पर दूनी ऐसी बिरह आगिनियारे । नाहक सीख देतहौ हमको डसिगइ नेह नगिनियारे ॥ नाजानौं केहि देश बिलमि रहे ठगिलियो कौन ठगिनियाँरे । युगलअनन्य अली प्रीतमहित सब बिधि भई योगिनियाँरे ॥ २७ ॥ कबहूं हिराइहौ जग जहर । सुनिये श्री सुखसुधा सौपन देखिये द्दग मेहर ॥ जन्म जूथन सें चढ़यो चित लोभलालच लहर । एक पल कल देत नाहीं कठिन कारन कहर ॥ विपुल वासर करि थक्यो बहुबिधि उपायननहर । तदपितिल शीतल न तन मन पर्यो संकठ शहर ॥ जानकी वर शरन अशरन हरन दुख दव दहर । जानि युगलअनन्य निज अपनाइये वसुपहर ॥ २८ ॥ कवन गुन लागे प्यारोपीव । संत सुजान समीप पूछिये करि

अरपन निज जीव ॥ सबसन सिमिटु निहारु निकट दृग सी सोहावन सींव । युगलअनन्य मथे बिनुमनमति कटत नख नवरस घीव ॥ २९ ॥ सुरंग बरसावे मेरा पीव । मैं तो करिहौं निवछावरजीव ॥ अब इतउतकी कुरुचि गई मिटि पगिरही प्रीति अतीव । युगलअनन्य शरन नामहि रमि दृढ़ सदन सुखनीव ॥ ३० ॥ अब मैं बसिहौं प्रीतम पास ॥ सकल लोक समशोक समुझि जिय सब सन होय निरास । बहुत दिनन की कठिन वेदना करिहौं सब विधि नास ॥ सुरज चंद अनल दामिनिसे जहँ पलपल प्रतिकाश । युगलअनन्य अमल नामहिं चाखि होहु मगन रस रास ॥ ३१ ॥ लावनी ॥ सब में परिपूरन राम न तिलभरि खाली ॥ जित जोहौ जिकिरि जमाय वही बनमाली । अँखियनमें चश्मा चाह धरे रहुप्यारे ॥ सब विश्व विलास प्रकाश रूप उजियारे । नहिं नेकु बिषमता लेश देश दुति धारे ॥ समता सुचि शहर निवास सजे सुख सारे । तन मन बन पर्बत बीच फैलि रही लाली ॥ १ ॥ सीतावर नाम ललाम गांठि निजबांधो ॥ सिर सहिके कोटि कलेश नेह निज नाधो । मन पवन बचन कुल करन भलीबिधि साधो ॥ सुरति शत शब्द सँम्हारि सदा अवराधो । मिथ्या धन धाम अराम काम घन घाली ॥ २ ॥ तजिके बककाक कुचाल सुचाल मराली । चलिये मलिये मदमोह मलिन कुशुमाली ॥ हर सायत है हुसियार विषय विष व्याली । समुझत रहिये श्रुति संत बचन खुशहाली ॥ रखिये जोगाय लयलाय सुगुन सुखमाली ॥ ३ ॥ बसिये सरयू तर तीर धीर मतिमानी ॥ चितचाह दाहकरि दूरि धूरि अनुमानी ॥ याते सब तजि भजु नामधाम गुनखानी । जिय युगलअनन्य विचारु रसा रसहानी ॥ आनँद सिंधु में मगन रहो गहिताली ॥ सबमें परिपूरनराम न तिलभरि

खाली ॥ ४ । ३२ ॥ तजिये तृष्णा तम तोम सु दुति दृगदूनी ॥ पुनि भजिये युगलकिशोर दशानहिं ऊनी ॥ वइवामा संग कुरंग रंग रस नासी ॥ गइ गुनन गवाइय जलद मिले अविनासी । बिन बोध वृथा बहु यतन हेत उपहांसी ॥ बसिये सुधि सुरति समेटि सो काया कासी । मारिये माया मद मोह मदन मदखूनी ॥ १ ॥ अंतरमुख बिरह जगाय गाय गुन स्वामी ॥ जाहिर कीने उत्पात घात बदनामी । डूजे हरदम गमरहित संत अनुगामी ॥ कूजे कल शब्द अजूब सुदिल अभिरामी । बहु बासर हिय हैरान परस बिन धामी ॥ २ ॥ अबहूं चितचेतत रंच परे नहिं खामी ॥ अनुचित चित युगल अनन्य कपट पट धामी । पेखत प्रतच्छ सबसमै सु अंतरयामी ॥ सब विश्व विचित्र विहार सुगुनागूनी । तजिये तृष्णा तम तोम सुदुति दृगदूनी ॥ ३३ ॥ अन्यरीत ॥ कहां अब बिलम्ब लगाये रसीले । देखे बिन मुख माह दाह दिल कित छबि रस बरसाये छबीले ॥ दशदिशि तम गम सम भाषत मोहि काहे न दुति दरशाये रँगीले । युगलअनन्य अली बिरहिन हिये जानि बूझितरसाये हठीले ॥ ३४॥ नगारानेहका नित बाजत आठौयाम। सुनत श्रवन सुखरस जस दायक भायक भल छबिधाम ॥ केकी कोकिल बीन सुधासे अधिक मधुर धुनि ग्राम । जो नहिं सुन्यो स्वादमयइहधुनि लह्यो न तिन विश्राम ॥ जगठग जड़वंचक तेई जन जो नहिं सुमिर्यो नाम । युगलअनन्य रहित संशय अब मन पायो आराम ॥ ३५ ॥ मोरी तोरी लागी लगन रघुबीर । जानत जीव जहान जहांलगि पगि रहिमाति गतिगीर ॥ सपनेहुँ शौक जौक दूजी नहिं पलपल प्रिय पथपीर ॥ जोइ जीवन धन चाह चारु चित सोइ सुखि सुगन गँभीर । युगलअनन्य शरन घायल दिल निरखत सरयूनीर ॥ ३६ ॥ कैसे भूलिगई वरबतियां ॥ सकृत

शरन संयुत सौंपत सुख ठौर ठौर प्रिय पातियां। सकल जीव निज जानि दयादृग देखत तजि गुनगतियां॥ हौं तेरी तूही मेरो पति दृढ़ प्रतीति छकि छतियां। युगलअनन्य शरन अंतर उर रुचत नहीं जस जतियां॥३७॥ सुरात सोहागिनि रँग रँगियां॥ प्रीतम प्रीति प्रभा अनुपम मिलि राम रोम जगमगियां। सुंदर सरस सोहाग राग गुन सहित मनोहर मगिया॥ पल पल प्यार प्राणबल्लभ लहि अंग अंग सुख सगिया। युगल अनन्य अली माती मद पियत भाव भलि भँगिया॥ ३८॥ राग काफी॥ जीवन जानकी बरसावत रस रसराज॥ प्रिया प्रेम पर तंत्र परम प्रिय सजत सजीली साज। हास विलास बिहार परस्पर बिगसावत ऋतुराज॥ बोलनि चलनि चारु चितवनि मन मोहनि रति रति राज। युगल अनन्य अली आतुर उर हरषावत रघुराज॥ ३९ छबि छावत छैल छलीन छकि छकि छोह सें। छांड़त छांह बांह नाहिन निज नाह परम परबीन॥ रजित शिर शिर ताज निरंतर नेही रस मनमीन। युगल अनन्य अली भावत हिय सियबर प्रेम प्रबीन॥ ४०॥ नहिं होत विलग पल पाव प्रीतम प्रेम सें॥ वेद पुरान संत संवत सुख सागर सरस स्वभाव। कपट कलंक शंक नासत सब सरसावत चित चाव॥ निपट निकट निज देत बास बर सहित भावना भाव। युगल अनन्य शरन सनेह बिनु भवनिधि गोता खाव॥ ४१॥ झुकि झुकि मौज में मतवालन कैसी चाल। इतके उत पग धरत धरनि धुनि निकसत नेह निहाल॥ नैन बैन राते माते मद झुमिरत नाम रशाल। युगलअनन्य शरन जनकी गति जानत सिय बर लाल॥ ४ ॥ मोरी तोरी प्रीति लगी है पियरवा॥ नेह निसोत नवल दशहूं दिशि पल पल छल बिन वही है बिअरवा। लाखन

बैदहकीम लगेपर मिटनहिं सकत असाध अजरवा॥ अब जानि विलग कीजिये रसीले लगिरहिहौं निशिदिन पगतरवा। युगल अनन्य शरननेही जन है यक जीयधरे दोयधरवा॥ ४३॥ छबीले छैल अँखिआ लगीतेरेरंग। दशहूंदिशि दरशात दामदुतिउमगत अधिक उमंग॥ भूलत सपनेहूं न भुलाय सुंदर रस निधि अंग। बड़भागी दिन लगन लगीदिल हिलिमिलि साजन संग॥ युगल अनन्य अलीपाई पिय पंथ अजूब विहंग॥ ४४॥ रसीलेलाला लागिगई तोसे प्रीति। जियजानत पहिचानत प्रीतम विरहिनि रतिरुचिरीति॥ चाह अथाह हमेश बढ़त चित रुचत न जग विपरीति। काहू संगरंग निकसे नहिं छोड़्यो नीति अनीति॥ युगल अनन्य शरन मिलिहौं प्रिय बढ़ी प्रबल परतीति॥ ४५॥ चैती॥ फूलीललित फुलवारी हो रामा रसवारी। रंगरंग सुचि सुमन सोहावन सिय प्रियतम मनहारी हो रामा॥ सरस समीर धीर दशहूं दिशि बहत रमन रतिकारी। विहरत युगल किशोर छबीले सखिन सहित दुति धारी॥ युगल अनन्य अली उमगत उर हरषावत बलिहारी हो रामा॥ ४६॥ सरससनेह सजावो सलोनी सांवलि या। सुभग समैं निरखिय नैनन निज नाहक लाज लजावो॥ गावो गीत चैत चोरन चित बाजन विविधि बजावो हो रामा। बल्लभ विमल विहार विचारिय नीरस भाव भुजावो॥ युगल अनन्य शरन सुखमा सरशान सुमधुर मँगावो हो रामा॥ ४७॥ ख्यालआसावरी॥ छबीली छैलछकनछलछलियां। छनछन नवघन उमड़ि घटा चित चितवनि चपला चलियां॥ नेहनदी उमगाय गाय तरतान मोहनी मिलियां। युगल अनन्य अली विकसीं सब भांति प्रीति कंज कलियां॥ ४८॥ कहिहौं ना सखि सपनेहूं समुझे की बात। रहिहौं मौन गौन गति तम तजिगहिहौं री सतनाम सोहात॥ बहिहौं

ना निज भाल भार भवचहि हौंरी श्यामल मृदुगात । दहिहौं हिर- सहिसाब आब विष नहिं हौंना हम तुम जनजात । रमिहौं सरस- स्वाद सुखनादहि चहिहौं ना पतिव्रत बिननात ॥ युगल अनन्य शरनजहिहौं जस महिहौंरी मनछीर विभात ॥ ४९ ॥ मैमतवारी विरह मदमाती । होसहवास हिरस हिरायगइ सियवररंग रस- राती ॥ मृदुमुशक्यान स्वान अनुपम सुख सुरति सजत सरसाती। युगल अनन्य अली कमलीगति रति नूतन दरशाती ॥ ५० ॥ ललनलखि लागी लोलन लाली । पलपल पर प्रीति काश प्रेमपन प्रीतम प्रेम रसाली ॥ सिया पिय जौकजगी अतर उर जगत जाल जसजालो । युगल अनन्य अलीगति माति रति लखेविशद वनमाली ॥ ५१ ॥ सिया रसवखिके चित चढ्यो है महलवा। सहजहि सरस रहस यशमात्यो उतरत छन पल नाहिं सोहलवा ॥ अति ममगति गतिथकि जकिहूं कि रहि देखत भेद न जगत जहल वा । युगल अनन्य अमलरस सुखसर प्रीतम भवन टहलवा ॥ ५२ ॥ मतवारी मुझे करि डारारे । प्यायशौक कलनामरूप रस सरसस्वा- दसुख सारारे ॥ नैन बैन चित चढ़ी खुमारी भारी दशा बिसारारे। हाय करेजे उठे हमेशे तनमन विरह हजारारे ॥ युगल अनन्य श्याम सूरति पर हरदम नजर निहारारे ॥ ५३ ॥ बिना हग देखे कहो सुख कैसे । दिल अंदर दिलदार वास वर सुमन सुगंध सुजैसे ॥ संतत शांति सजाय नाम रटलावो लैअन मैसे । युगल अनन्य शरनपावो तब खोजसुदिल गत पैसे ॥ ५४ ॥ दाहदिल दूनी दलि दमकावो ॥ दरदवा दीगरदेखो मतमुरसिद मेहर मनावो । दशहूंदिशि दौरन दुर्मति तजि पियपद पाससमावो ॥ फ़िकरफ़कत फरयाद फरसाद जिकर जलवावो । युगल अनन्य शरन नौबत निजनाम विमल बजवावो ॥ ५५ ॥ जिसने दिलकी सफाई पाई । छाई तिनहीके

चश्मन बिच छटाछबीली भाई ॥ उनही को मतलब हासिल सब होय नहीं दुचिताई। काई कामवाम तिनहीकी मिटीदरद दुखदाई ॥ सुधा सरोवर माझमगनमन भये वही हरषाई । युगल अनंन्य असलधायल प्रिय पायल प्रेमबजाई ॥ ५६ ॥ सफाई दिलकी करनाचहिये। श्रीसतगुरु संबधसारसजि सीख स्वच्छ गुनगहिये॥ विशद विचार मथानी करदृढ़ विमलवेद दधिमहिये। जोकुछ आय परे संकटशिर सोसमुदित सब सहिये॥ सुंदर सुछबिसोहाग सीमा अनयास ललित लयलहिये। युगल अनन्य शरनछबि दृग दिलवर दरयाबिच बहिये ॥५७॥ ठुमरी ॥ लीलालखिलाल ललित लोचन थकि रहेरहे। नहिंकछु मोहिंसोहात सखीसुनु छनछन चाहबढ़ेरे॥ कबदेखौं मैं श्यामसजन नैननजल बहैबहै। बड़भागिनी सोहागिनी सोसुख सौगुनसुमन धरेरे ॥ जेहिजिय जोकजगी जगमग प्रीतमपद गहेगहेरे । लोकलाज कुललाज राजरस नीरससमुझि परेरे॥ युगल अनन्यअली आतुरदरशन छबि चहेचहेमला ॥५८॥ समुझायचुकी मन ना माने। जिसपैपड़ी झलक छबि निधिकी हुये इस्कमें दीवाने ॥ कालकराल ब्यालसेबाचे सपनेहूं नहिं डरपाने। विरहबीच बूड़े विह्वल बपु विविध विकार भारभाने॥ अमलअजूब खूब सीतावर पीवत मदमनमस्ताने। खूबीमधुर मिजाज मोबारक मनसिस्वादसत सुखमाने॥ युगल अनन्य शरन खुशखबरी बाजत शाहनशहाने ॥ ५९ ॥ प्रभु हम छलनछबि छकिछये। रूपअमल अनूप निज पर आवरन तितमये॥ करत करम कदंबकिंचित क्लेशकदननभये। अनलसी करनीरस मृदुसुख दूनादिन दिन दये ॥ देखि दृगदिल दशोदिशि दुतिहीनजनु निर्भये। भानुकुल कलकंजदिनमनि शरन सुख लखिलये॥ सरसगुन सोभन सुभावन विरुदअनुदिननये। जोहियेजन जानि युगल अनन्य तनमनहये ॥ ६० ॥

रसियासे लागिगई रतिप्यारी। माती महामोद मादक छकि ताकि छबि अवधबिहारी॥ सहितज्ञान कुलकान प्रानधन चतुरचलन परवारी। कौनसुने जनगुने धुने शिर कठिनघाव घनकारी॥ युगल अनन्य शरन साजनसन स्वादसनेह सुधारी॥ ६१॥ अनोखे लालाहो लखिलई तोरीरीति। कहनगहन अतिसघन अवनवन तनमन न्यारीप्रीति॥ दायकदापताप दिलवरउर आतुर क्रूरन अनीति। समुझत सरससनेह सामने गावत गुनगनगीति॥ युगल अनन्य शरन मेरेमत सदा तिहारीजीति॥ ६२॥ रसबस होयगई मतवारी। हो शहवास हिरस न रही कछु लोक वेदते न्यारी॥ सुनत न कानकही काहूकी प्रीतम प्रीतिअहारी। युगल अनन्य अलीअलबेली दसा निशा मतवारी॥ ६३॥ पियाबिनको वाकिफरसरीते। पढ़ि सुनि गुनि बौरायरहे सब कहूँहार कहुँजीते॥ किये बिना कुर्बान आपको रहिगये मूरखरीते। युगल अनन्य अलीअँखियन बिच रमोराम सहसीते॥ ६४॥ ललनकैसे निबाहेगी मोरी तोरी प्रीत। जोभावत हियेबीच प्रानप्रियते पथचलत सँभीत॥ महामलीन मूलपरगट वपु तासननेह प्रतीत। पलभरि कह्यो न मानत ममभन रचतरीति विपरीत॥ युगलअनन्य शरन तापितमन कीजिये सपदिसुशीत॥ ६५॥ सखीरी पियपाये बिन सुखकौन। सुनत सुयश सतवचन विशद तउमिटत न दिलदुख दौन॥ मिलनरहित रस उदयहोय किमि सबसाधन गुन गौन। विषयविलास कुवास सुमनसम सदा समुझ विषजौन॥ लागतअंग सरस शीतलप्रिय सियपिय परसितपौन। युगलअनन्य शरन प्रीतमहित धरि रहिहौं मनमौन॥ ६६॥ जानकीजीवननेह नहावो। नाहकहीं दशहूंदिशि दौरत फैरत ये न दशाप थहावो॥ बोध विचित्र न बूझि परे कछु ज्ञान गरीय गरूरगहावो। कानकरो कहूं

कथनी कलिकूरविकार विचारि बहावो ॥ युगलअनन्य पियूष पगे प्रन प्रीतिप्रतीति सुरीति रचावो ॥ ६७ ॥ प्रेमकरुप्रेमकरु प्रेमही श्यामहै। प्रेमप्रतिकाशसे सहजहीं भासपरमेश सुखरास सबभांति अभिरामहै ॥ मोदमकरंद दुखद्वंददम नैकगुनछंद फरफंद मोहगत काम है। जहां नहिं रेख गुनरागरुचि द्वेष निश्शेष पदपेखपर वेष धवधामहै ॥ युगलअनन्य तजु अन्यादिशि आसजस जन्यजपुनाम परतंत्त्व विश्रामहै ॥ ६८ ॥ प्रेमपरतंत्र प्रभु प्रेमपरतंत्रपुनि प्रेमपर-तंत्र श्रुतिसंतभाखे। सकसुखवारि भववासनाजारि रचिचाहअवि-कारि चितवीचराखे ॥ रमनगुयगाय वपुपरमपुलकाय दृग नीर-झरलायरस स्वादचाखे। साधना सकलफल अमल निजनेह थल वास सजु अचल बल मथकनाखे ॥ रमनश्रम समनचख चमन बिच सैर करवाय हुलसाय चखवाय दाखे। कर्बानि करतूति भव भूति परसूति मतिकरत बिनहेतु अब खोलु आंखे ॥ युगलअनन्य धनधन्य आपन्नपद सुभग सुशरन्य रस एकलाखे ॥ ६९ ॥ का-हेन बोलैंगे पियमोसे। हौं भोली डोली चढ़िआई लागलग्यो लखि तोसे ॥ दूजी तरफताकिहौं कोहिविधि समुझिसुभाव सुवेसे। कर अवलंब न दई जानि निज अब बैठेगहिगोसे ॥ युगलअनन्य तेरी-चेरी चितहित अफसोसे ॥७०॥ आज हम अवधनगर सुखलीनो। श्रीसरयूजल दरस परसकरि पायों नेहनवीनो ॥ लालन ललीरंग रसभीजे जननसंग सुचि कीनो। परिपूरनपद अमल मिल्योमन पीठदोऊ दिशदीनो॥ युगलअनन्य शरनकरुना बल छोड़िगयो रिन तीनो ॥ ७१ ॥ लावनी ॥ छकिकेरहिये हररोजखोज जगजारे। ताकिवो रघुवर दिलदार रंगदरबारे ॥ श्रीअवधविहारी नामसुधा-रस पीके। दीजेदुख दारुन दमक दवा अविलीके ॥ सुमिरन कीने बिन वृथा बहुत क्याजीके। शिरगरजत कालनिहारु दृगन

सुमतीके ॥ १ ॥ नखशिख सिय पियवपुपेखु तिगुन गतिगारे । गुनज्ञान ध्यान सुखखान सुयश नित्त सुनिये ॥ फिरिबैठि कहूं एकात शांत मनगुनिये । श्रमरहित मोह निधि पार शीश नहिं धुनिये ॥ २ ॥ कुलकरन कलेवर कोश विरहहत हनिये । समतोष दयावर विरति सुरति सुखसारे ॥ छनछन्न मूरति महबूब नैन निज तारे । कीजिकायर पन त्यागि पागि पनप्यारे ॥ ३ ॥ बानीवर युगल अनन्य हृदय अवधारे । रसएकरहे हियहरष तरस तमपारे ॥ दोउ दिशिसे नितरोकि होयदुसंयारे । किकरेहिये हरराज खोज जग-जारे ॥ ७२ ॥ भूलि जानिजावो मोरीबाट साँवरेसलोने छबीले । हौंतोतिहारी गई बलिहारी अवधविहारी सुवनसमराट ॥ दिल-वरदरश देखायप्यावरस सुचिसरयू मनिघाट । युगलअनन्य अली अवलोकिये उघटिये कठिनकपाट ॥ ७३ ॥ ममदिशि हेरना होराज सुखसागर रामरँगीले । पलपल विकल सुथल न रहत चित चलदल सम चलत्योंई ॥ करतदुख दारुन दरद दबायदेत यहि हेत उचित दिलदेरना हो राज । सुंदरश्याम सजल घन तन बिन अतन यतन जस रतन हरत छिन दिनदिन बढ़त विखाद विविधि निज जानि नहीं मुखमोरना हो राज ॥ सुनिसुनि सरस सुभाव सोहा-वन चढ़त चौगुनोचाह उछाहन नाजानौं केहिकारन आवन होत कठिन पनपेरना होराज । अंगअंग भूषन वसन सजावो हँसन रसन युतबीनबजावो युगल अनन्य हीय हुलसावो तरलतान सरटेरना हो राज ॥ ७४ ॥ गवन बिन नाह नजीक नजेहौं ॥ महामोद मन मौनहोय सखीकहौ कौन विधिपैहौं । युगलअनन्य मिलन मोहन महबूब न इत सुमिलैहौं ॥ ७५ ॥ रँगीलेहो रँगीलेतेरी प्रीति । रंगभरे हियहरे हसन नवसुंदर हो रसिक कलगीत ॥ विशद विहार बहार अंगफूलेहो सदा अविगीत । युगल अनन्य चित्त में मेरे

शोभित हो रहसरसरीत ॥ ७६ ॥ सियवर सुधि पलछन मन कियोना । छनभंगुर वपुपाय परम प्रिय जपि जियो ना निजनाम अमोलवा ॥ इतउतचित चंचलचितवत नित हित हियो ना गुनगाइ अतोलवा । युगलअनन्य शरन दुर्मतितजि दिलिदयोना मति महलवा ॥ ७७ ॥ एकबार कृपाकरि आयरहो हमरे घरमें प्रीतम प्यारे । पलपल परपथ प्रीतमपेखों घबराय सदन अंदर द्वारे ॥ जानोंनहिं कौनकुदिन जेहिते इतआवत लाललाज धारे । मनमोज होय सोइसखुनकरो हम तो कहिके नितहीहारे ॥ करजोरि विनय मानोमेरी अवि युगल अनन्य सुमनवारे ॥ ७८ ॥ बसिये श्रीसरयूतीर रमत रसरासी । नाहक तपतीरथ त्याग धर्म उपवासी ॥ गिरिवर वन विहरन वृथा बूझुविश्वासी । जो लगी न रसना रटनछोड़ि छललासी ॥ जिमिसुमन सुभगदरशात सुगंधउदासी । सब साधनफल श्रममानि प्रीतिसजखासी ॥ १ ॥ जगजालजवाल कराल व्याल हगदेखो सबतौरहा न हरराज चोज जियपेखो । सतगुरु सतसंग समीपदीप दिललेखो ॥ निजनाम जपत अनयास नसतमनमेखो । संमतश्रुति संतअनंत धाम प्रतिकाशी ॥ २ ॥ चितचोरन चितवन चपलचाह हनिहेरो । इतउतकी आस दुरास घूरिबिचगेरो ॥ परमेस्वर नाम दिनेश हमेश उजेरो । साधनसमुदाय सनेह विहीनअँधेरो ॥ चातक समटेक सजाय सदा सुखआसी ॥ ३ ॥ पलपल पर प्रेम प्रकाश सुयश रंगभीने । अनुदिन उर उज्वल होय ललन लखिलीने ॥ कहे युगल अनन्य सुजान समुझ परवीने । काहूविधि मिले न नाह शीश बिनदीने ॥ मदमोहमदन मलवाय होय पददासी । बसिये श्रीसरयूतीर रमत रसरासी ७९॥ बिताय दियो दिनवा ऐसेहिं ऐसे । खातापियत बतरात हँसतनित बाढ़िगयो तीनोरिनवां ॥ सपनेहुँ साँच संग नहिं कीनो झूठननि-

मित बहायो पसिनवां। वरविराग अनुराग सहित शठ पहिरयो नाकटि एक कोपिनवां॥ युगलअनन्य शरन विषयनलखि कियो न कबहूं मन थिनवां॥ ८०॥ सोगई सारीराति न जागी सुरति-या। नानारूपलख्यो सपनेमहँ निरख्योना सखि श्यामसुरतिया॥ युगलअनन्य सजग हूजे अब प्रीतम प्रीति पुरातिया॥८१॥ भूले कैसे रसीले हमारीगली। चितवत चखपटप्रेम पसारे तउन आवत बानभली॥ निरखि नेहनिधि नवलवामवर बिगसेगी कलकंजक-ली। श्यामसुजान गुमान करोकिते हों सहचरि मिथिलेशलली॥ युगलअनन्य अवशि अपनाइये विषमाविरह ज्वरजलनजली ८२॥ कजरी॥ आईऋतु पावससताई मेरोजीव। रैनअँधियारी भारी निकट न पीव॥ दशोदिसि दामिनीदमक दुखदीव। नानारंग बादरबरस विषबीव॥ कोकिल कसाई कूटटुक करेहीव। मारेमोर चातक पूकारे जलजीव॥ कोउन सहाय हाय उठत अतीव। तो-रिये न नेकुराग ताग नेहनीव॥ युगलअनन्य अलीआतुरसीव। जानकी जीवन अनाइये समीव॥ ८३॥ छनछन घनवन बरसे ये आली अंगअंग रँगसरसे। दामिनिदमक मेह निरखि हरखि हिय सियपिय बपुपरसे॥ गावेगुन गीतरसरीत प्रीतपागी बरसत तन मन करसे। उज्ज्वल अमल कल सुथल सजल लखिहोय न उरहर से॥ युगलअनन्य अली ललीलाल ख्यालबर दशदिशि दुतिदरसे॥ ८४॥ ऐ आली गगन घनघुमड़ गरजे॥ पियबिन मेरोजियरा लरजे। चमकि चमकि चपला चहूंदिशिसे छन छन चख चित तरजे॥ बोलत विषम बोल जित तित रु विहंग करनमन मरजे। आखिल भुवन दुख दुवन भरितहित हरन हजारन हरजे॥ कासे कहों कलेश वेसादिन सुनत नहीं कोउ परजे। युगल अनन्य शरन सिय पिय बिनुदरि न शकत दिलदरजे॥ ८५॥ बिनसेज

न मोहिंसोहैहै। पावसघन घातक घुमंडदिन दुतिदामिनि डरपैहै॥ कोकिल कूक टूक-कारन हिय सुनि विरहिनि तलफैहै। विशद विरह परवाह दाह बिच तनमन सकल बहैहै॥ युगल अनन्य शरन विरहिनि गति पियपहँ कौन जनैहै॥ ८६॥ बहुरि बन बोलन लागे मोर। सखि घनश्याम आगमन लखि लखि सरसावत सुखशोर॥ पूजिय परम प्रेम पानी करि पद मयूर रँगबोर। दीजे विरह व्याल भोजन हित है अति उचित निहोर॥ हंस प्रशंस सरस चातक चक कोकिल चारु चकोर। युगल अनन्य अली इन ऊपर वारिये काम करोर॥ ८७॥ बहुरि बन बोलन लागे मोर। शूल सहस पविसम लागत मोहि बिन प्रीतम चितचोर॥ उमड़त घन बिच व्योम दाम युत देत दरद घनघोर। घाय न घात हेत बरछीसम बरसत बूंद कठोर॥ श्री दशस्यंदन सुवन निकट नहिं सुंदर रस जस जोर। युगल अनन्य अली सबही सुखसाजजहर झखझोर॥ ८८॥ पपिहरा तूं कितबोलिउठी। पिय पिय कहत रहत मेरो मन अतन उपाधिलुटी॥ जबसे श्याममनोहर घन दुति चित वृति इतते रुठी। तबसे नहिं सोहात सजनी कछुनिरस सबसुखसुठी॥ जो कहुंपियसुधिपाय होयकहुं देउंकंचन भरि मुठी। युगल अनन्य अली विरहिनि पर चाहिये सब विधि तुठी॥ ८९॥ बहुदिन बीते सुधि पाये। नवनैनमेह झरिलाये॥ बहत विरह वर्षात घातस। विहलता दरशाये। सुरपति धनु उर उदित मदन चित चौगुन चाप चढ़ाये॥ चातक रटन रसन पिय धुनि ध्यान ज्ञान बिसराये। युगल अनन्य शरन नाचत मन मधुर मयूर रमाये॥ ९०॥ सखि श्याम सजन निरमोही। कबहूँ न दृग भरिजोही॥ गावत गीत गरूर गुनन युत अति अदभुतदिल द्रोही। मधुर पियूष सहस गुन मूदन बोलत वचन अकोही॥ औरन

तन चितवत हितवत बहुप्यार बढ़ावत ओही। युगल अनन्य शरन तरसत नितमिलत न मम मन मोही ॥ ९१ ॥ बिन दरश परस सुख कैसे धनहीन मनोरथ जैसे। सुनि सुनि श्रवन सु गुन सुंदर वर उर अकुलात अवैसे ॥ रुचत न चित चरचा सजनी सुख दुख सम सहस सुरैसे। सांची लगन लाल जानत नहिं समुझि परत बुधिलैसे ॥ युगल अनन्य शरननेही की सुधि कछु करिये समय से ॥ ९२ ॥ पियगुन निधान गरवीला। अंग अँगब छकन छबीला ॥ निज नख नवल प्रकाश रासकरि काम महामदकीला। परकर निकर सुकर सरसिज सम कोमल ललित लीला ॥ साजत सुभग सुधा सर भूषन वसन कशन सरशीला। युगल अनन्य शरन सु मुनिनमन मोददेत शुभशीला ॥ ९३ ॥ पुसतो ॥ अवध बिच बास नित करिहौं। दशौदिशि देशपरि हरिहौं ॥ लगी है लगनलरिकाई। न छूटेगांठि सनन्याई ॥ संतसतगुरु सियवरकी। सुरुचि सांची सही घरकी ॥ धाम अभिराम मन मानी। सोहै सरयू सुधाखानी ॥ उठै तरंगरंग द्रुतिदानी। महामुद मोद दिलजानी ॥ रसिकजन भावना नीकी। युगल रस सुख सुधाजी की ॥ अवध बिन बातजनि चाले। डगहुँ भरि कतहुँ नहिं हाले ॥ पियो इत प्रेम मद प्याले। युगल अनन्य मुदमाले ॥ ९४ ॥ ललन छबिदेखना चहिये ॥ कोशला वासदृढ़गहिये। वचन से और नहिंकहिये ॥ एहीपन धरि न दुख दहिये। निवासी सकल सुखरासी ॥ रूप जगदीश श्रुतिभासी। इहां नहिं कालगुन कर्मा ॥ कर्मी माइक नहींधर्मा। अवधकी रेन परवारो ॥ योग जप ध्यान सुख सारो। पलक किये बास भवन्थारो ॥ झलक महबूब दृग धारो। वासना वृन्द फलनाहीं ॥ कृपासे सहज नसिजाहीं। युगलअनन्य पुलकाहीं ॥ संत रसके समुदमाहीं ॥ ९५ ॥ अन्यरीत ॥

अवध बिन देखे चितनहिं चैन । कहौं कहांजाऊं सतगुरु अब छोड़ परमप्रिय ऐन ॥ नीर मीन सममन मेरो भयो अनत न लेनो देन । युगल अनन्य शरन सियवर गुरु संत सोहावन सैन ॥९६॥ अवध बीच बिचरैंगे दिनरात । शंकाश्रम भ्रमनेकु न करिहौं लहिहौं नित कुशलात ॥ जिनको लगत भूमिप्यारी नहिं तिन शिर पर जमघात । युगल माधुरी निरखि नैन भरि तजिहौं सब सन नात ॥ युगल अनन्यधाम अविचल बसि औरन करिहौं बात९७ लहिरिआ सरयू पिआरिआ देखिये दृगन लगाय । इतउत तू दौरत बौरे कहँ है सुख अवध सहरिया ॥ युगल अनन्य शरन पुरवासिन निरखत कतल कहरिया ॥ ९८ ॥ जय श्रीचित्रकूट मन भावन । कामद नाम मनोहर राजत भाजत भव्य सोहावन ॥ सप्त वरन रसिक भाविक प्रिय रासादिक छबि छावन । मृदुल अमल अवनी रसदाइनि युगल भाव प्रकटावन ॥ दरशन हरत महाअघ परसत पावनहूं को पावन । कोटि कलप काशी मथुरादिक फल छनमें दरशावन॥त्यागि जगतजंजाल ख्याल भ्रम बसिये गिरिगहि दावन। दुर्लभ देह पाय करुना वश संत संग सजु भाव बढ़ावन ॥ युगल अनन्य शरन रसना नित जपु गिरिवर यश सुख उपजावन ९९ सँवलिया से कौनी विधि निबहे नेह । जौनवस्तु प्रियलगत श्याम मन तासन कबहुं न श्रेह ॥ परदा प्रबल मान नानाढग करिरह्यो चित तित गेह । शरन वचन वर तन बहुधा मुख पौरुख अनुछन देह ॥ युगल अनन्य शरन मनि मंदिर त्यागि उड़ावत खेह१०० कैसे मोरीलागे तोसों प्रीतिरस रूपिनी । चाहौं चित हित हरसायत उछाह युतकाहू भांति कांति मिलेकांति आनि रूपिनी ॥ युगल अनन्य अली कली शीतल फरही कीजिये विकास वर वेगही अनूपिनी ॥ १०१ ॥ सीताराम शरनगहु छन छन । पावन परम

धरम सु सूरम मय आमय शमन रमन गुनत न मन ॥ सब साधन शुभ सुमन सुफल भल अमल अबल बलकरन अमनजनं। या ते परे परेश प्रमुद वर देन नहीं कोउ काज सजन घन॥ संत शास्त्र संतगुरु संमत सुचि सावधान सुत्रि चारु अवनवन॥ युगल अनन्य शरन शीतल तर रससों नशिर सुहृद सघन घन॥ १०२॥ सरयू तट प्यारो लागेरी। सिय श्याम सुपद सदराग भागरस जसजिय जागेरी॥ युगलकिशोर चारु चिंतामनि सुमत सुहागेरी। दरशावत दुतिं दिव्यतरंगिनि सुरति दिमागेरी॥ मकर निकर विराजहिं जहँ तहँ प्रिया पन पागेरी। युगल अनन्य उमंग रंग मन रंचन खागेरी॥ १०३॥ सुनो प्रभु पाय पदारथ मेरे। दिन दिन बढ़त घटत न कैसेहूं विषय चित्तगुन घेरे॥ याके बेचन हेत हजारन द्वारन फिर्यो अनेरे। काहू की कछु शक्ति चलत नहिं हैं गरीब बहुतेरे॥ हारि हिये सतसभा गर्क्यो बाल सुन्यौं सुयश बहुतेरे। श्री रघुराजउदार राजमनि लेहैं कुधन सबेरे॥ सुनि उत्साह चाह बाढ़्यो जिय आयो शरन सुडेरे। युगल अनन्य खरीद कीजिये उचित न विलंब अबेरे॥ १०४॥ प्रभुतोहि सदय सम्हारे बनि है। मतमेरे दिसि देखु दयानिधि हों अपराध अगिनि है॥ दीनानाथ गाथगुन गरजत बरजत विषय छनेछनहै। सो सुभाव सुचि सुमन मननकरि सपदि रंकतर धनिहै॥ अपनो स्वामि सकल सुख संयुत तेहि हित सेवक सुख सुवितानि है। युगल अनन्य शरन अपनाइये सुजन सुकीरति भनिहै॥ १०५॥ विमुखको मोरि बराबरि करिहै। पापी प्रबल पुंज हिलिमिलि तउशीश नीचहीं धरिहै॥ मेरोबिना कौन त्रिभुवनमें निरय निकाय न भरि है। छन छन छटा बढ़त मम अघलखि धर्मराज ज्वर जरि है॥ तीरथ व्रत तप विपुल साधना सकल सुकृत मिलि हरि है।

युगल अनन्य दोष मेरो अतिसबल निरखि अति डरिहै ॥१०६॥ इह मनमेरा बड़ा भयो बैरी। रैन ऐन न चितचैन बैन बहुसिख-वावो परि पैरी ॥ नौका नाम. निदरि नालायक तृनगहि चाहत तैरी। थी रहोत हिय पीरबढ़त सुख हित घूमतशठ सैरी ॥ निज सम्बन्ध सरस त्यागत बिष पागत नीरस गैरी। युगल अनन्य आस सियापय एक ओर यतन नहिं जैरी ॥ १०७ ॥ तजि मन मीता कहां चलिजैये ॥ कौनठौर गुनगौर किये तूं तजि सुखसहज समैये। देख्यो दग दिल खोलि कपटबिन नाहक फिरि पछितैये ॥ तिहूं-लोक सतशोक समाकुल छनछन छान न छैये। युगल अनन्य शरन बिनती सुनि काहूविधि सरमैये ॥ १०८ ॥ अरेमन मेरे कहूं मत घूमें। बारबार पदकंज चारु रज चशम चहिचामें ॥ महामोद बि-सराय सदन निज कमली सम झुकि झूमें। इतउत तकनि तरक तूरन करि नेकु नयन धरु धूमें ॥ युगल अनन्य शरन सियपिय गहु नहिं तोपरि है कूंमें ॥ १०९ ॥ मन विकलहोत अबकाहे प्रभु शरनसदेव निबाहे। संकटसोच विमोचन लोचन दिस नहिंकरत निगाहै ॥ सहजसुभाव शील सुमिरन करु परिहरु दुखदिलदाहे। जिन शवरी फल असनमानि भल सुरुचि समेत सराहे ॥ अगम न कछु करुना कटाक्ष छकि जौनजौन चित चाहे। दगन मीचकरि चलिये कुपथ तऊदेत बताय सुराहे ॥ युगल अनन्य शरन कायर पन त्यागि नाम अवगाहे ॥ ११० ॥ सुख सर अथाह रसलीजे। निजरूप सहित तनभीजे ॥ पैठत कहां कंदर्प कलिल जल रंचक लाज न कीजे। मज्जन पानपुनीत प्रान परिपोषन जीवन जीजे ॥ महामलिन मानस मलछन छन छायाछीजे। अमल अमोल झलक मरघट मुक्ताफल रहसामिले चितचीजे ॥ युगल अनन्य शरनयुग युगलो बहुरि न पर प्रभुसीजे ॥ १११ ॥ इन्द्रिन बसहै आपहि-

रायो । संत समूह निदेश वेश उर सपनेहुँ नाहिं थिरायो ॥ चलत चलत अति कठिन कोस कबहूँ न पायँ पिरायो । तृगुन ताप तापित तीनौतन पल भरि नाहिं सिरायो ॥ सिय बल्लभ सुचि नाम न लीन्हो ज्ञान गरूर गँवायो । युगल अनन्य शरन अंतर्घर पुनि पुनि बपुख चिरायो ॥ ११२ ॥ राग के समस्वाद सुनीना । राग विवश अगजग दरशत न जाहिर छायी कहुँदीन दुनीना ॥ अमल अदाग भाग वर धननित याके सम सुचि देव धुनीना । आप परे शरहसरस राते रहत कहो पुनि देव मुनीना ॥ युगल अनन्य शरन एसा को जेहि सुनि गुनि पुनि शीश धुनीना ॥ ११३ ॥ लागके बिन भाग जगेना । पूंछौ संत सरस श्रुति संमत इहपथ विमुख प्रकाश पगेना ॥ भागल भाव चय चाव चपलचित और यतन रचि कबहुँ भगेना । सिया रामरस रंगरगीले तासु बीच पल पायँ रँगेना ॥ युगल अनन्य परम प्रीतम पद प्रीति प्रतीति उरासि उँमगेना ॥ ११४ ॥ भजन करु निशिदिन नाम निदान । जो चाहसि चितचपल अचल पनतो पलकीच परे जनिजान ॥ नाद नवल अल्हाद बढ़ावन औचक चटक सुनै बहुतान । युगल अनन्य शरन रसना रटु अंतर डोरी लायसुजान ॥ ११५ ॥ तजु चित चतुराई संसारी । यामे नफा लह्यो नाही कोउ पचि गये बहुव्यापारी ॥ अनुदिन दीन ये कीन विनास भाषत नहीं उजियारी । पुर धनदार हरन इच्छाहिय है इहिबड़ होसियारी ॥ संतसमागम श्रीसतगुरु पद सुमिरन नाम खरारी । युगलअनन्य शरन न रुचत छिन प्रीति पत्रिका प्यारी ॥ ११६ ॥ इह रहस्यधारन हौं करिहौं । सहजहि रीतिप्रीति समतासम सिय बल्लभ गुनभरिहौं ॥ मत्सरादि आसुरि संपति गुनि ताको सहज बिसरिहौं । मनामान मृषा ते मृषा लखि आनँदपथ अनुसरिहौं ॥

नि॰ अस्तुति यश अपयश संसारिक चित्त न धारिहौं। युगल अनन्य शरन अबते इह रहस सुदृढ़हिय धारिहौं ॥११७॥ इहमन कबहूं लागिहै पदमे। जैसी प्रीति प्रतीति निरंतर जगतजीव विषयदमे ॥ कबहुं मगन ह्वै है छबिनिधि में जिमि अजान जननदमे। विरह व्यथा व्याकुल ह्वै है इमि जिमि रोगी गतिगदमे ॥ युगल अनन्य शरन सीतावर रसछकिहै जहि छदमे ॥ ११८ ॥ ऐसेह्वैहै सुमन्व-अथिर हमरा। निरखिय नाइनैन करुनाकरि पुनि न चाटिहै चमरा ॥ शील निधान न डील लगाइ यहै भरोस नहिंदमरा। उदित प्रताप भानु कीजिय जिय रहि न सके तिलतमरा ॥ संत समंत प्रशंसत प्रभुगुन दमन मोह मद ममरा। युगल अनन्य शरन सीतापति आस खास सुख शमरा ॥ ११९ ॥ कबहूं देहै दरश मन महियां। जित जगमंगित वसंत होइहै हरनहीय द्रुम छहियां ॥ परिकर निकर चहूंदिशि बनिठनि सेयरहे सुधि नहियां। प्रीतमप्यार समेत प्रिया कलकंठ दिये बरबहियां ॥ लखि लखि छबि लोयन ललचै हौं तोरत तृन तेहि ठहियां। युगल अनन्य रन सखियन सँग बसि रसिहौं नित तहियां ॥ १२० ॥ मन अब अमन भया है मेरा। श्री सीतावर नाम कृपा ते नस्यो निखिल उरझेरा ॥ चित बिचरुचत नहीं सपने में जग दिशि हेरी हेरा। पगि रह्यो प्रिय प्रमोद प्रीतम रस छनपल सांझ सबेरा ॥ युगल अनन्य शरन करिहौं नहिं फिर अब फेरी फेरा ॥ १२१ ॥ कौन सुनै इह मोरि रहसिया। अनजाने स्याने स्याने सब अवश तिन्हे हिय हसिया ॥ लगी न चोट चतुरचितवन चित हित न किये रस रसिया। मोह अमावस तमाजिनके जिय सोन लखै दुति शशिया ॥ युगल अनन्य शरन कायरजन लहै न गति रति असिया ॥ १२२ ॥ मन मुख गांठी गांठिन छोरे। अपनेहीं करसो

अपनो गुन भरम नदी बिच बोरे ॥ जगत जीव जड़ जाल लगे नित तिनसो निज जिय जोरे । श्री, सीतापति सुगुर सन्तपद नातामुद प्रिय तोरे ॥ सुधा समान नाम रसनारटि तामधि पुनि विषघोरे । त्राहि त्राहि कहि कबहूं न सपनेहु श्यामलगौर निहोरे ॥ युगल अनन्य शरन तन आखिर गलिजैहै जिमि ओरे ॥ १२३ ॥ लावनी बड़ी । भजिये जियजीवन जान जानकी जानी ॥ सब भांति मनुज तन कांति भ्रांति तमहारी । अति अगम सुमध-गुन खानि फवित फुलवारी ॥ जेहिपाय संत रसवंत समंत सवाँरी । सिय कंतमिले हुलसाय गायगुन भारी ॥ पारसपर प्रीतमप्रेमस मय मनमानी ॥ १ ॥ कीजे सतसंग सुधारि रंग रसदाई । पीजे प्रिय प्रीति पियूस मधुर लवलाई ॥ भीजे तीनो तनसपदि स्वादसरसाई। छीजे छलछाया छोभलोभ ललचाई ॥ काहे को करत गुमान मूढ़ अभिमानी ॥ २ ॥ सिय रामनाम अभिराम काम हारुतेरे । तउ तीनताप दुखदाह दरिद नितनेरे ॥ बिन रमन रटन विश्वास आस नहिं पूजे । ताही हित मनसिजमोह महा नल भूजे ॥ आनँद सिंधु मधि मगन होय पल प्रानी ॥ ३ ॥ रसनागावो गुनगीत मीत मनमारे । कसना रीझे रघुवीर धीर छबिधारे ॥ हँसना हरसावत होय एक रसप्यारे । बसना श्रीसरयू तीर प्रबल पनधारे ॥ काहे युगल अनन्य हमेश ऐस अविकारे । सुमिरन सुभग स्वाद सजाय जगत जसजारे ॥ गुरुदेवदया दिलराखि मिल्यो धनपानी। भजिये श्री जीवन जान जानकी जानी ॥ १२४ ॥ गरक मनमोरा पिय गुनमाहीं । बारबार चितवत हितवत हिय जैसे चन्दचकोरा ॥ सुन्दर श्याम सरस घन बोलन श्रवन चाह सममोरा । रसनारटन लगाय रहस नित नाम नवीन किशोरा ॥ युगल अनन्य-शरनजगके दिशि झांकत कबहूं न थोरा ॥ १२५ ॥

अब जियजाना जहँ न तमासा। झूंठी रीत प्रीत सबही की जैसे नीर बतासा॥ अपने आपने स्वारथ संगी अंगी विषय विलासा। जिसमें जीति होय अपनी सोइ डारत दुख निधिपासा॥ युगल अनन्य शरन सबसे मनपलटि पर्‍यो अनयासा॥१२६॥ मौन निज नेह नगरदानी। स्वच्छ सुभाव सहित हिय हितकरि तरत तुरत प्रानी॥ अमित उत्पात घात खानी। सुनिये श्रवनन कथन उचित नाना संसृति बानी॥ जानकी वरगुन गन ध्यानी। उभय भांति कलकांति करन समुचित सुखमा सानी॥ वैषरी विषय बलित तानी। युगल अनन्य शरन चेतन चित नाम जिकर ठानी॥१२७॥ वचन वर मधुर सुमुख निकसे। श्री सीतावर कृपा पाय अनयास बनज विगसे॥ काक कोकिल बुध विमल गँवार। परखि परत बानी बोलत ताते करुरीति विचार॥ लोक अपबाद बाझ कथनी। सपनेहूं संकोच विवश नहिं उचित सुमन मथनी॥ सदा मुख मौन धरे रहिये। समय पाय प्रिय प्रेम सहित मृदुबांग कछुक कहिये॥ दोष मिथ्यादिक विफल बिचारि। युगल अनन्य शरन सुनाम जपु मदन मोहमद मारि॥१२८॥ आपको कलिल कीच मानो। काहू समय न है प्रमाद वश उज्ज्वल जिय जानो॥ कृपा कमनीय कलाहेरो। निज तनमन आत्मा वारिरस सरस सुधानेरो॥ न चरचा मतमतांत कीजे। होय हृदय हरसमें मगन प्रभु-पर पियूष पीजे॥ मानके किये विमुखतातीर। साधन सकल नसाय जात श्रुति पठनहोत समकीर॥ विषय वन विरस विचारत बोध। पैदीन ता सुदृढ़ धारत धिय द्रुततर विलय विरोध॥ निरन्तर नाम शरन गहिये। युगल अनन्य शरन भूलेहुँ भववारिधि नहिं बहिये॥१२९॥ यह मन मेरो महा अपराधी। मानत नेकु नहीं संतन सिख स्वान पूंछ गुनसाधी॥ हरदम हरित होत हिरस

नहिं मिलिहोत मलिन लहिआधी। यदपि अनेकन खेदसहत शठ कठिन वासना बाधी ॥ युगल अनन्य सियावर रति बिनु पलक न लगत समाधी ॥ १३० ॥ प्यारे तिहारी बलैया लैहौं। संचित चितमन मति रति राहत रीति-समूह निछावरि देहौं ॥ सबदिशि से हगदूरि भूरिकरि नूरिनेह छबिछैहौं। पाय्र सजीवनिमूरि नाम गुन अनुदिन शोक सजैहौं ॥ युगल अनन्य शरन उमगत उर सुन्दर श्री रस निधि गुन गैहौं ॥ १३१ ॥ सुनिये सन्त बानी विमल। जौन जन जियजांनि पगिरहे अकल कबहुँ न विकल॥ सकल साधन श्रम किये कहा निखिल करनी विफल। संतसांचे शब्द श्रवन विहीन निशिदिन निबल ॥ वेद व्यास समास सत मत मध्य सब सुख सिकल। युगल अनन्य शरन अनुपम पद सु पावत बिरल ।१। १३२ ॥ कवनविधि नाह निकटता होय। पथ प्रतिकूल शूल संयुत तहँ चलत सुमुद मुदखोय ॥ आरत वचन घन सजन संपति सद सुनत न प्रमुदित होय। विश्व वासना करन विकीमति तजि प्रभुदिशि खुशबोय ॥ कपट कलंक कलेवर मेरो तेरो योग न जोय। युगल अनन्य शरन सुनाम जस समुझि द्वारि रह्यो सोय ॥ १३३ ॥ रैन दिन ऐसे जात सिरात। सोहबत हँसतरसत विषयन रस खात पियत बतरात॥ उदयअस्त रवि हेरि सुमति नहिं पावत गति कुशलात। मोह महा मदिरा पीवत नित बकत वृथा बद बात ॥ हे करुनेश कोसला मंडन खंडन दोष सँघात। युगल अनन्य शरन अपनावत नाम सुरंग विभात ॥ १३४ ॥ वृथा मति खोवो इह दिन प्यारे। सुंदरस्त्रास रास संपति सुख सबही विधि दुखदारे ॥ नाम निरामय निखिल नेह घर जपिये सांझ सकारे। श्रुतिसतमत सिद्धांत भ्रांत बिन सुनि गुनिये अविकारे ॥ युगल अनन्य शरन सरयूतट बसिरहिये

सुखधारे ॥ १३५ ॥ कभी वह दिन भी आवैंगे। तकि छबि छकि सिय श्याम सजन तन मन बिसरावैंगे ॥ ललित गुन नाम गान करिके प्रेम प्रमोद नीर नयनन छन छन बरसावैंगे। उमँग उर चाह मिलानधारे विरह विवस विह्वल व्याकुल पियमिलि हरसावैंगे ॥ चपल चतुराई सब तजिके युगल अनन्य शरन सियवर रमि रंग सरसावैंगे ॥ १३६ ॥ बहुत दिन बीति गये प्यारे। क्यों नहिं लेत खबर मेरी बेदरद नृपतिवारे ॥ निकाई नवल नेह नूरी। विदित विष विपरीति होत सो किये बिन ममऊरी ॥ दूसरी गति मति जो होवे तौ कहिये दहिये दुबिधा मन हानि होत गोवे कसौटी कसो जौन भावै। रंचक मन जो मुरे ललातो सजा सही पावै ॥ निहारो नित औगुन मेरो। निज सुभाव सुचि समुझि सरस अपनावो निजनेरो ॥ प्यास दिल आस अधिक छाई। युगल अनन्य शरन सियबर अब हेरिये मुशक्याई ॥ १३७ ॥ चितवन फुरन ते चित चपल थिर अंतर आतम शुद्ध मही। मन उनमुन भये न खेद खलक अनयास वासना विपुल वही ॥ गुन तत्त्वकरन प्रानादि बिषय बिन बोध बिरोध विकल्प रही। निज निर्व्यलीक निर्वेद बलित अभ्यास मिलत मुदमोद मही ॥ मिटिजात वासना मोह मयी नजिकात नूरलय लालवही। सांचे सतगुरु सतसंग पाय छबिछाय छहूं चितुरंग गही ॥ खटका न रही हिय हेचकहूं जिय युग्म अनन्य सुचाहचही ॥ १३८ ॥ मनमेरो महा महिपाल विराजत अंगदेश। करन कदंब सभीत प्रजा कुल अकल प्रकाश विशेश ॥ तीस तीन युग जोर चोर डर कतहूं नाहिन लेश। सावधान सतसंग रंग रत विमल विचार बुधेश ॥ युगल अनन्य शरन सत्यापति केवल कृपानिदेश ॥ १३९ ॥ पिय बिन कैसे हूं न बीतत रजनीरे। पलपल पीर प्रमाद याद नहिं रूपरंग

रसरीतत ॥ युगल अनन्य ललित लाल जलहि मदन जंग जिय जीतत ॥ १४० ॥ बालम हो बरतीहों विषय बयानन । जानत जिय जाहिर कीजिये किमि निज गति निकट अयानन ॥ नेह निधान मृदुल मोहन पन कठिन न मन दरम्यानन । युगल अनन्य अली आतुर उर रुचि चित बीच पयानन ॥ १४१ ॥ जल बल भइहौं कोयलवा छयलवा तूं कित छबि छाये । देखिय दसा दयाल आय दृग फेरिन पल पछताये ॥ कछुक विलम्ब प्रान प्रीतम हित पवनन सकत उड़ाये । मुख मयंक माधुरी सुधा सुचि सींचि सुजान जिवाये ॥ युगल अनन्य सुगन सुंदर निज नेहिन नगर बधाये ॥ १४२ ॥ बिलसत बाग बहरिया लहरिया तूँ लेत न काहे । मूदत नैन नासिका नाहक बिन सुगंध अवगाहे ॥ गुनागून रंग अनुपम रसकीजिये नेक निगाहे । मन मधुकर घूमत घायल सुख स्वाद विहीन कुराहे ॥ युगल अनन्य अली आँनद अति बाग सनेह निबाहे ॥ १४३ ॥ छन छन जात चलो इहतनवाँ । तऊ नहीं चेतत चितामनि राम नाम गुन गनवाँ ॥ पर अपवाद विषाद बाद बहु बकत बितावत दिनवाँ । संत संग सेवा सतगुरु की करत प्रमाद चितनवाँ ॥ युगल अनन्य शरन कौड़ी हित खोयों रहस रतनवाँ ॥ १४४ ॥ मधुप मन मेरो मत कहुं भटके । रसनिधि नेवल नरम नेहिनबस पद पंकज बिच अटके ॥ सकल सुमन सुख समन हिये गुनि अरस मानि नित हटके । विषय विकार वासना मत बन बीच शीश नहिं पटके ॥ युगल अनन्य शरन सुख सागर बसिबो सरयू तटके ॥ १४५ ॥ सीख सुचि सुनिये मम मन प्यारे । सावधान रहिये निशिदिन नित निज निर्मल गुन गुनिये ॥ इत उत अरस अयोग रोग लखि विरह वसन वर बुनिये । सरस सोहावन शब्द स्रवन करि विषय बीज भल भुनिये ॥ युगल अनन्य

शरन सांची रति राति सहित न पुनि शिर धुनिये ॥ १४६ ॥ अचल चित रहना नामहिं गहना। सकल विकल भ्रम भाव भानताजि भाजि घर बरनं अकहना ॥ नौका नामरूठहोय भल भववारिध नहिं बहना। श्रुति सागर आगर अनुपमरस संत संग मिलि महना ॥ युगल अनन्य शरन चिंतामनि चरितचारू चखिचहना ॥१४७॥ अभय पद दानी सुमिरो प्रानी। कौन कलंक पंक अपने तन परसावत मुदमानी ॥ तेरी तृषातरल न बूझिहै पीवत मृगप्रियपानी। सुधासिंधु श्रीमान नेहयुत जपिये सुनि सतबानी ॥ युगल अनन्य शरन आखिर ये करिहै नाम निशानी ॥ १४८ ॥ बसिगयो सोई तबीयत माहीं। जाकी छटा छबीली छिलिकी अलिख भवन पर छाहीं ॥ जासुनाम अभिराम मनोहर सुनिगुनि तापसिराहीं। कामल अमल मधुर मूरति लखि अमित मदन बलिजाहीं ॥ युगल अनन्य शरन शुभदिन कब जब लखिहौं गलबाहीं ॥ १४९ ॥ पियबिन कैसे रहेगी मोरे रामा। भोरी बुद्धि बयस थोरी मोरि दिन दिन दाह दहौंगी ॥ चाहे जौन कहै कोई कछु संकट सकल सहौंगी। हो रामा ॥ युगल अनन्य अली पल पलपर विरह समुद बहौंगी। हो रामा ॥ १५० ॥ घनश्याम सरस सुखदाई। वर व्योम वितानतनाई ॥ मधुर मधुर धुनि श्रवन सुधासम सुनत स्वाद सरसाई। बरसहिं विशद बूंद बामा दिल दृगन उमंग बढ़ाई। शीतल सुभग समीर दशोदिशि अंग अनंग जगाई ॥ दामिनि दमक दशन दुति दरशक पल प्रति प्रीति सगाई। नानारंग उमंग प्रकट करि कामिनि केलि सुहाई ॥ युगल अनन्य अलीपावस संयोग सुमन विकसाई ॥ १५१ ॥ बरषाऋतु रस सरसाय दई। तनमन मति मधि रति उपजनई ॥ विरह व्यथा व्याकुल वासर बहु बीतत आज उछाह छई। निरखि निरखि श्यामलघन सियवर हरषि

हरषि हिय होशहई ॥ नवल नेह निर्मोल नीर गंभीर वरषि छवि अकथ छई। युगल अनन्य शरन सिय पियपर बार बार बलिहार भई ॥ १५२ ॥ श्री सियराम स्वभाव विचारत ॥ होत हृदय उत्साह चाह निज पर स्वरूप अनुछन निरधारत। कोमल अमल कलित मन मोहन छोह न सहस सहित प्रिय आरत ॥ वारक विनय वैन श्रवनन सुनि गुनि सनेह नति भवनिधि तारत। कूट करम कालिमा कलिल कलि कहर कलाप विलय निवारत ॥ साधन सकल सारसुखमासर श्रुति पुरान सतप्रकट पुकारत। युगल अनन्य शरन प्रफुलित चित चिंतामनि गुरु गुन धियधारत ॥ १५३ ॥ शरन गुनि उर उत्साह अपार। श्रीवर बदन सिंधुतट प्रियढिग वैन विशेष उदार ॥ जानि न परत सकृत प्रपन्न को अर्थ समर्थ विचार। पाहि पाहि प्रभुपाल पेखि बहु बारहिं करत पुकार ॥ मोरमलीन स्वभाव मिटत नहिं कारन कौन अधार। युगल अनन्य उपाय आपही दूजो कथन विहार ॥ १५४ ॥ कृपा करि सुनिये विनयदयाल। दशदिशि दगाबाज बाधत मोहिं देत दुसह श्रम शाल ॥ वेष अशेष रागद्वेषादिक विरचहिं जगमग जाल। काहू भांति न छूटन पावो शरनागत पनपाल ॥ चितचार रुचि होत कबहुँ प्रभु सुनिसत वचन रशाल। सुधि बुधि बहुरि नशात दीन हित कीजिये सपदि सम्हाल ॥ निज निश्चै करुनेश नामबल है हौं अवशि निहाल। युगल अनन्य शरन आरत अति पलपल विकल विहाल ॥ १५५ ॥ हियहाय जायदिन बिनहिं सजन। कोई आइ कहे नहिं महलमजन ॥ जेहि जोहि हाय तमतारतजन। अंग अंग रंग नवनेह भजन ॥ जाहिखाति न सब मौज जजन। जिय युग अनन्य छबि छांह छजन ॥ १५६ ॥ भइ भवबंधन बीच मलीन। तप तीरथ साधन समूह करि होत न विमल ये कीन ॥

नातानेह देह गेहादिक दुखदायक गुनहीन। तासोसरस शौक साजत मन मूरुख अधम अधीन ॥ हेहर हिय वासी रासी सुख शरन पाल पनपीन । युगल अनन्य सपदि अपनाइये सिय बर परम परवीन ॥ १५७॥ मोहिमुद दीजिये दीनदयाल। अतिआकुल मदमदन मलिनमन फसिरह्यो जाहिर जाल ॥ कटुक काज खरखाज करत कइकल्प गयो गुनमाल । पलहूं भरि न शांति अन्दर बुधि ग्रसित विषमता ब्याल ॥ प्रनतारत भंजन गुनसूरति कीजिये श्रीनृपलाल। युगल अनन्य उजास खास लहि होय हरित हियहाल ॥ १५८ ॥ मधुररस पीवत मनमस्ताना। चौगुन चमक चतुर चित अन्दर अनुपम रंग रँगाना ॥ निशा नैन वर बैन रैन दिनदुनियां दमक लुकाना। आशक इस्क एकताइज ब-दिल माशूक समाना ॥ हरइक तरफ नजर आया उह दिलवर नेह निशाना। महरम मन मुरसिद सिखयो सुख सर्वस अरसहि-राना ॥ महलमाधुरी मोद महानिधि मगन रहत उरझाना। युगल अनन्य शरन सावितसत शौक जौक गुजराना ॥ १५९ ॥ इस्क दामुझेँ पैबान चलाया। अजब अनोखी अदायारकी वचन बीच नहिं आया ॥ बेधत दिल अंदर अशंक सरनेक दरद नहिंलाया। मदन मरोर करोर भांतिराचि बरबस भवन भुलाया ॥ कौनकबूल करै अरजी गरजी सबजग दरशाया । युगल अनन्य शरन घा-यलकी आह वही बुझवाया ॥ १६० ॥ रसीली सुनियेतान सुल-तान। सकल सुखनको खान प्रानप्रिय नहिं दिल्लीमुलतान ॥ किन्नरगन गंधर्व सर्वसुख होत न तिल तुलतान। युगल अनन्य नाम सुमिरत धुनिसुनत सुमन मगनान॥ १६१ ॥ पीके पियाला पिया परचैहौं। पलपल प्रेम बढ़ाय गाय गुनरस निधिछबि अर-चैहौं ॥ मनमति गुनि गुरु ज्ञान ध्यान सब साधन हित खरचैहौं।

नाहनेह बिन देह गेह कुल खेह समुझि न रचैहौं ॥ युगल अनन्य शरन सतगुरु श्रीनाम चारु चरचैहौं ॥ १६२ ॥ सोवत हीं गई बीति निशा सब भोरभयो उठि देखु तमासा। चहूंओर घनघोर सरस धुनि सुनि मुनि सहज विनोद विलासा ॥ उदित विदित कमनीय भानुकरकंज मंजु विकसित हियेबासा। मज्जनमधुर मान सर करि अब भजिये सियरघुवर तजि आसा ॥ प्रेमनेम नित चित हित से उर उपजावत अनुराग प्रकासा। युगल अनन्य शरन सतगुरु पदपंजक भजत भावमल भासा ॥ १६३ ॥ ग़ज़ल ॥ गाफिल करके गुमानमें क्यासोवता पड़ाहै। तूदेखनजर ऊंची से शिरकाल खड़ाहै ॥ दरखाव ख्याल खौफ में दिन बहुत सा गुजरा। अब छोड़िके चल राह फिकर में क्यों अड़ाहै। दुनिये को तूं कोमलन तसौउर कर अयप्यारे। सबतौर से तहकीक किया लोक कड़ाहै ॥ दरदस्त पांय लोगोंके जंजीर जड़ाहै। घर बार के घेरे में सजन भूल बड़ाहै ॥ कहताहौं तुझे बारबार अय सजन समुझो। तेरा तो फकत युग्म जिगरजान जड़ाहै ॥ १६४ ॥ जहां चाहो तहां राखो हमारा कुछ न चाराहै। फकत तेरी कृपाकायम हमन मनमें बिचाराहै ॥ खुसीगम मुक्ति यम हूरपुर बराबर बूझ धाराहै। हुकुम सेहै मुझे मन्जूर तख्तओदाह दारा है ॥ मिसल तसवीर परवसहौं अचेतन चित हमारा है। करौं किसतौर से अरजी तुझे जाहिर पसारा है ॥ उदै उरउल्फ तें उज्वल बजुज तेरे पहारा है। करम करके मेहर कीजे कदम अवलंब नाराहै ॥ जौन विधि चाहिये राखिये सबी विधि मम गुजारा है। युगल अनन्य तसबीर सम फिरेतेरे अधारा है ॥ १६५ ॥ जोशमें जब कभी दिलआता है आप में फिर नहीं समाता है। श्याम सूरति सजनके यादोंमें अश्कको खूबसाबहाताहै ॥ डूबिके शौकसरोवर

अन्दर मोती नवरंग रहसलाताहै। बेखबर होके उसी लज्जत में दीन औ दुनिये को भुलाताहै ॥ युग्म इसभेदको छपाना भला ख्याल करने से खौफ खाताहै ॥ १६६ ॥ सब स्वाद सुख सलोने का सतसंग में पाया। आनन्द सुधासिंधु में मनमीन समाया ॥ काढ़े न कढ़ेगा कभी रस स्वाद लोभाया। कौड़ी से भी कमतर मुझे दिवलोक दीखाया ॥ अन्दर न रही चाह चपल चांदनीमाया। सब साधना आराधना धोखा नजर आया ॥ दिलदार की परप्रीति सुमतिमाझ सोहाया। धनभाग गुनसोहाग मजा महरमी छाया ॥ सबतर्फ से छड़वाके युगल पास रखाया ॥ १६७ ॥ जबसे दिलदार को दिल देखाहै। मिटिगई नींद निगोड़ी इह हमारी यारो ॥ पड़ती अब तो नहीं निमेखा है। खानरस पान की चरचा न चलावो ॥ मुझसे जानो जी जाका न लेखा है। होगा क्या हाल भला कुछ तो तुम बयान करो मेरे हाथों में कौनरेखा है ॥ युग्म होनी रही मेरी सो सबीहो बीती। प्रीति पाहन की मढ़ीमें खा है ॥ १६८ ॥ चाहमें चित अपना उरझाते हैं हम। आहके करतेही मुरझाते हैं हम ॥ दिल लगा दिलवरसे अब मैं क्या करूं। बहुतसी मेहनत से सुरझाते हैं हम ॥ बेमुरौवत साथ होगी क्यों निबाह। सोच में दिल अपना उक्तलाते हैं हम ॥ मरता है तूं बेसबब उस वास्ते। उसको तो सबतौर बुझवाते हैं हम ॥ क्यों कटेगा फंदा मेरे जिग्रसे। फिक्रमें इसही के मुरझलाते हैं हम ॥ ऐस सब संयोग पाये यारके। युग्म हालत हिज्रमें माते हैं हम ॥ १६९ ॥ लागी तुमसे हमारी यारी है। देखलो क्याही बकरारी है ॥ चश्म चितचोर मूबारक मुझे लखा जावो उस बिना खाक होशयारीहै। हस्ततक याद आपकी दिलमें ॥ आह रहजावेगी बिसारी है। ऐसी तुमको नहीं कधीं चहिये ॥ दारुदरदस्त फिरि बिमारी है।

कुंम नाचीज तौभी तेराहै ॥ वश्लकी राह चाह धारीहै ॥ १७० ॥
अन्यरीत ॥ बैठिये मन रंगमहल में । वृथा बितावत बैसबोधमें ॥
बिनु मगन रहो सिय लाल टहलमें । हैतू कौन करत कारज कह
काजनहीं कछु लोक कहल में ॥ रैन ऐन चित चैन दैन गुन गनि
गाइये बसि चहल पहल में । युगल अनन्य शरन शोभा सुखसान-
कूल सब साज सहल में ॥ १७१ ॥ सुमिरिये मन नाम नेह निधि ॥
कमी गमी मिटिजाय पलकबिच छाइहै छबि श्याम सकलविधि ।
करजोरे तोरे समीप नित हित हेरनि हाजिर सबहीसिधि ॥ और
प्रताप अताप कहौं किमि अनायासही अंकविधि । युगल अ-
नन्य शरन सांचीराति चाहिये चित हमेश ऐशरिधि ॥ १७२ ॥
सियवर बिनु बैन बांझ बिचारत रहिये ॥ ललित ललाम नाम गुन
युत नित वचन से कहिये । सतगुरु संतसीख श्रवननि सुनि सुभग
ज्ञान गति गहिये ॥ श्री अवधेश सुवन सुंदर रति सरित बीच
बलि बहिये । युगल अनन्य शरन धामहि बसि लाल न लाह
सुलहिये ॥ १७३ ॥ चरचा तजि अन अर्चा सियवर कीजे हो ॥
मर्चा महा विषम विषसम सब बात समुझि चुप लीजे । परचा प्रेम
पथंत मिले मुद नाम अमीरस पीजे ॥ खरचा खौफ जहान हान
निधि छोड़ि युगल लौ जीजे । युगल अनन्य शरन विदुखन वर-
बानि विपुल पतीजे ॥ १७४ ॥ दृगन भरि देखिये दिलदार ॥
चितवन तीर गँभीर पीरकर चटक चलावत चार । सुंदर बदनचंद
चमकावत लखि सखिगन बलिहार ॥ युगल अनन्य अली झांकी
छबि बांकी अति हितकार ॥ १७५ ॥ छन छन प्रेम पियाला पीवो ॥
राम नाम अभिराम मनोहर रटत निरंतर जीवो ॥ नाम विहीन
साधनापट कैसेहु सपने जनिछीवो । युगल अनन्य शरन सुमिर-
न साजिकरु सनेह दृढ़नीवो ॥ १७६ ॥ नामगुन मांझ मगन भयो

जोई ॥ व्यापत काल जाल तिनको नहिं छबि रस जस मतिपोई। सुधा सहस समता सुन्दर वर वरन अपर रसछोई ॥ अमित जनम मतिमंद मोह मद असद वासना धोई। युगल अनन्य शरन सीता पति सहित सुरस खुसबोई ॥१७७॥ नामरूपरस स्वाद तरतहिये। श्रीसतगुरु वर बदन चंदच्युत प्रिय पियूष गुनगहिये ॥ चिंतामनि चयचारु चटकतर भक्ति सुपद रति चहिये। मान पमान हान नानाविधि सुखद समुझि सब सहिये ॥ श्रीसीता बल्लभ विनोद नव नेह नदी बिच बहिये। युगल अनन्य शरन श्रम भ्रम बिनु दोष राष द्रुत दहिये ॥ १७८ ॥ भइ मति अचल हमारी सियजू से अरज सुनाय। पूरन परम विचित्र चारुचित हित युत गुनगन गाय ॥ कानन कठिन काल कुलफत कुल कलमष काम कनाय। युगल अनन्य शरन सौगुन सुख संतत सरस सजाय ॥ १७९ ॥ केहि हित विलँब गये लखि हिय हाय हजारों। रसना रुकन लगी पिय पिय रटि हगतम तोमछये ॥ स्वास उसास खास गुन गन गुनि गाफिल सहज भये। अधरन आयरहे प्रानहुं इह तलफत नेह नये ॥ युगल अनन्य शरन लीजे सुधि दिलवर अदये ॥ १८० ॥ निशिदिन प्रेमसे सजुनेह। परम पावन पंथ अविचल निखिल गुन गन गेह ॥ लोक लाज समाज नीरस सुवन धनतियस्नेह। प्रान प्रीतम बसीकर मृदुमंत्र मोहन येह ॥ सार श्रुति सत मत संरस सुख रूप परम सनेह। युगल अनन्य सुभाव केहि हित अनूपम मेंह ॥ १८१ ॥ अब हम भईं सोहागिनि सांची। कृपा करी कोशलपति प्रीतम मधुर मोह घत मांची ॥ बिसरी विषय विभूति वासना नासी जगमति कांची। नूतन नेह बंधि नूपुर पद परसप्रीति युतनाची ॥ साधन सकल निवारि नेम करि युगल नाम सनराची। युगल अनन्य शरन सीता वर रहस भाव न॰

यांची ॥ १८२ ॥ जानकी रमन पियारे तुमसन लगन लगाया । कठिन गांठि नहिं छुटत छुटाये समुझि सनेह समाया ॥ रसिकन संग रंग पहिंचान्यो पांचौ वपुष भुलाया । मतमतांत सबदेखि-चुकी सत सुख सपनेहुं नहिं पाया ॥ अब जानि श्याम और नहिं भासे रहे छोह छबिछाया । युगल अनन्य शरन वंदी पिय सपदि कीजिये दाया ॥ १८३ ॥ बेदरदी दरद क्यों जानेहो । वाके हिये न व्यापी ऐसी ताते दुख नहिं माने ॥ जाके पायबे आय न भासी सो हँसि हांसी ठाने । मौन रहो तौ रह्यो जात नहिं बोलत डोलत भाने ॥ हाररही कछु यतन न लागे ऐसी व्यथा समाने । युगल अनन्य शरन हरसायत उर बेधत दृग बाने ॥ १८४ ॥ चैती ॥ रशिकन सँगहो रंग रस छाया मोरे रामाहो । रँग रस छाया रहस झलकाया मोरेरामाहो ॥ बिलसी विमल वर बगिया प्रीतम हित स-रससजाया । अँखियां अधिक अकुलाती सुधि करि प्रिय आप भुलाया ॥ मिलिये रासि केश रँगीले छलिये जानि जिय रघुराया । युगल अनन्य तिहारी सबही विधि विरह सताया ॥ १८५ ॥ मोसे करलेहो प्यार पियारे । प्रान पियारे योबन मतवारे ॥ तोरे हेत बन बन डोलौं योगिनि बनि सांझसकारे । काहे निठुरता धारी कोमल चित राज दुलारे ॥ सुनि शीलसुभाव सजी लोमन लगि गयो नाहिं बिसारे । युगल अनन्य न त्यागो अनुगामी सुपद अधा-रे ॥ १८६ ॥ केहिविधि विरह बुझावों सखीरी केहिविधि प्रीतम दर्शन पावों । शिथिल रहत अँग अंग विरह बस दरद भरी अकु-लावों ॥ औचक उठि बेहोश देवानी पिय पिय कहि बिलखावों । कबहूँ अचानक हाय हिये करि जीवन स्मृतक कहावों ॥ कहुंसुधि पाय झरोखन झांकति पथिकन से बतरावों । नाजानो कौनी विरमायो यह गुनि हिय पछितावों ॥ युगल अनन्य धारि धीरज

कहुँ ललन ललित गुनगावौं ॥ १८७ ॥ अन्यरीति ॥ कासे कहौं को माने हमारी। अपने जान चतुर स्यानी तूं मेरे मत मतिमंद गँवारी ॥ लग्यो न चाव चाट प्रीतम रस अबहीं तो भोरी सुकुमारी । घायल भई न पिय गुन रंचक ताहीतें देती गनिगारी ॥ जब मिलि हेरि लिहै रसिया सें तब करि मौन रहेगी प्यारी। युगलानन्य दसा न जूकतर बरनत शरम सकोच अपारी॥१८८॥ चहेन चाहे न चाहे पिया हम चाह रहे। प्रीति अनूठी मीठी लागी सिरतनवारि निबाह रहे ॥ आये नहीं जानकी जीवन मम देखतहीं द्दग राहरहे। युगल अनन्य खबर जलदी ले नाहिं तो आखिर आह रहे ॥ १८९ ॥ लावनी ॥ प्रीति प्रीतम की प्यारी है। सजनी शान सनेह समुझु कुछ सबसे न्यारीहै ॥ जहँ तिल टिकन नहीं पावै। तहां जाय मन मौज सहित सुख सदन सवारी है ॥ निगम नित नेति जाहि भाषैं। सोई सरस स्वाद सुखमा मिलि प्रेम प्रचारी है ॥ लगी जब तक जग जन आसा। तौलौ गली भली उस रसकी हिये न विचारी है ॥ कृपाबल पाय सुगममानी। युगलानन्य शरन रसिकनके संग निहारीहै॥१९०॥ आशकी कीमत को जाने। कासें कहौं कबूल करै उरधरै कौन माने ॥ पड़े परपंच बीच स्याने । चतुराई चौगुनी चटक चितचाव नहीं आने ॥ कथें कथनी विराग ज्ञाने। बिना बोध अविरोध सोध सतभव भ्रमनहिं भाने ॥ पड़ी जब काल चोट प्राने। युगलानन्य इश्क कीने बिन आखिर पछिताने ॥१९१॥ साहेबी बिरह व्यथा बांकी। लूटत लोक लाज लायकपन धन न बचत बाकी ॥ भिरे रन सनमुख गति काकी। मरत भाव दावसे हिलि मिलि अजब कला याकी ॥ पिये प्रीतम मंद छबि छाकी। होश न रहन देत निज परकी ज्ञान ध्यान ढांकी ॥ चलावत आहतीर

ताकी।युगलअनन्य शरन घायल दिल करत रहित ढांकी१९२॥ पिय पर प्रीति परख नहिं जानी। चिंतामनि सें सरस एकरस-पायन पीर परानी ॥ नृप सिरताज कियो करुना रत तदपि तरलता तानी। श्रीसरयू जल स्वच्छ सुधा लहि पीवत विषरसपानी॥ सुंदर मधुर रसाल रसिक सतसंग रंग नहिं आली। युगलअनन्य शरन बंचकमति भजत न शारँग पानी ॥ १९३ ॥ कैसेहू प्रभु परतम अपनावो। कठिन निरयनी रस निर्गुन पथ फेर विशेष सिरावो ॥ विपुल वासना बाद विषय पुनि निज जस सरनि बहावो। फांसी दुखरासी गांसी गुन बांध्यो हृदै छुटावो॥ अभिलाषा साखा बाढ़ति नित मनसिज जनित नशावो। युगलानन्य शरन संतन की रहस सुदेश देखावो ॥ १९४ ॥ सिय पिय केहि हित अब नहिं बोलो। मेरे जीवन जान आपही भलीभांति जिय तोलो ॥ जो कुछ कपट कलंक होय मम सोउ कसना करिखोलो। उर अकुलात श्याम घन निशिदिन सुनि बिन बचन अमोलो॥ युगल अनन्य अली सियजू लखि कीजे नेह अडोलो ॥ १९५॥ सब विधि मोह विपिन दुखदाई। जामधि भूलि परत उबरत नहिं जनमत मरत सदाई॥ बपु अभिमान समान सिंह तहँ गरजंत हिय हरषाई। राग द्वेष इरषा मत्सरमद जुलमी जीव जनाई॥ काम कलुष कंटक कोटिन कटु पग परसत मुरछाई। लता लोभ लपटी ममता तरु सुरझत नहिं सुरझाई॥ प्रबल प्रेतगन करन भयावन पलप्रति दुख दरशाई। युगल अनन्य शरन सीतापति शरन आस सुखदाई ॥ १९६ ॥ रे मनमोह महा नद तरिये। मोह महानिधि दुखद सकल विधि तामधि पायँ न धरिये॥ भ्रम प्रतिकूल भूल जाको तट तेहि पर पारहि परिये। भवँर भयंकर विषम दुखद गुन तेहिपरि नाहिं उबरिये ॥ मनोराज कल्पित

प्रपंच बहु बीची बीच न गिरिये । बाधात्रिविधि जानु बड़वानल समुझि बूझि क्यों जरिये ॥ कठिन कराल काल मकरादिक तिनसन भलेहिं उबरिये। साधन अपर तरनि लघुसम गुनि करि सुतर्कपरि हरिये ॥ युगलानन्य शरन सिय बर पद पोत सुबैठि उतरिये ॥ १९७ ॥ मन मुख गांठी गांठि न छोरे। अपनेहीं करसे बांधत जड़ कहो कौन तेहि तोरे ॥ जगत जीव जंजाल पगे नित तिनसने नाता जोरे । श्री सीतापति संत सतगुरु प्रेम सुवित न बटोरे ॥ सुधा समान नाम रसनारटि बकिबदबच विषघोरे। पाहि पाहि सन्मुख सिय पिय कहि कबहूं नाहिं निहोरे ॥ युगल अनन्य भजे बिन सिय बर जैहै भवनिधि बोरे ॥ १९८ ॥ बीत्यो बहु दिवस न जान्यो। सिय बल्लभ उरनहिं आन्यो ॥ केवल कठिन कलेश कोश कामिनि सनेह सन मान्यो। दोष घोष सत सोख खानि खल पलक ख्याल फुरमान्यो ॥ महल मनाक नाक समता गुनि गनी न रंक पछान्यो। शरबत सुधा सार सीतापति सुयश सुपान न ठान्यो ॥ छमा छबीली छटा धिया धरि कोह कटक नहिं भान्यो । करन कलंक विषय बरबस ह्वै जहँ तहँ भटकि भुलान्यो ॥ युगलानन्य शरन सुसंग पथ पेषत पोचपरान्यो ॥ १९९ ॥ मोहिं अब अपनाइये स्वामी। लखि संततनिज अनुगामी ॥ हार्यो अमित कलप कलपत तलफत बहुत बिकल स्वामी। चिंतनचारु चाहते सपनेहुँ कियों न मैं कटुकामी ॥ युगल अनन्य शरन सरयूतट दीजे महल मुकामी ॥ २०० ॥ जौलों बर बैन न धारे। तौलों दुख दुसह सँम्हारे ॥ बिबिधि बिकार बयार बहत बहु तपतर सांझ सकारे। रचना असत समस्त विश्व तबहीं लगि सत्य निहारे ॥ मोह महान महोदधि मधि सठ डूभत सुबुधि बिसारे । दिवस चार ब्योहार बिलोकत हरषित

कबहुँ न हारे । युगल अनन्य शरन निरमल तब जब निजनाम बिचारे ॥ २०१ ॥ क्या खूब तमासा प्यारे । इह जगत जालजड़ जारे ॥ गमी खुशी सबके शिर ऊपर तउ न उपाधि निवारे । झूंठ सांचको मरम न समुझत मुखर मान मद धारे ॥ बंचक विषय विषम अपनावत सरस सकोच बिसारे । सीताराम नाम मैं आलस ब्यर्थ बकत पचिहारे । युगल अनन्य शरन पछितावोगे आखिर बजमारे ॥ २०२ ॥ कहुं मन पलटि परेगो मेरो । नवल निशाना नेह नजर निज नेहिन नामिन नेरो ॥ मधुर मोह घतमीत मनोहर मानस मनन उजेरो । करि है हरसायत चंचल मति तजि के सांझ सबेरो ॥ युगल अनन्य शरन सीतापति सुमिरन स्वाद घनेरो ॥ २०३ ॥ मन मधुकर बन बनज बिसारत । कहा कहौं याकी अटपट गति विषय बबूर विपिनि सुख धारत ॥ मधुर मरन्द स्वाद चाखत नहिं कटु कखायरस हित झख मारत । सुभग सहज सौरभ अरुचत दुर्गन्ध दिसान सँम्हारत ॥ रसिक सजातिनसें सनेह तजि रुच्छजनन हित आरत । अपर रीति चित शांति न पावत होत गरूगुन गारत ॥ अपने करन लगाय अनल शठ तन मन धन जड़जारत । युगल अनन्य शरन भरमत शठ निज आतमा न तारत ॥ २०४ ॥ क्यों कायरपन मनले लीना । सूर समूह सभा सत सुंदर संग सजत नहिं नेह नवीना ॥ वृथा बितावत बेस बिनाबल अबल बदत बुधवेद प्रवीना । शरम सकोच पोच नहिं मानत जानत जहर सुधा समदीना ॥ निज मन मुकुर विलोकु कपट तजि छिन छिन छाय छटा छबि छीना । तब तोहिं तनक झलक लखिपरिहैं करिहैं क्रूर करम कुलकीना ॥ लहिहै लाइ ललित लोचन लखि लीला लली लाल रस झीना । युगलानन्यशरन संतनभजु

नवलकिशोर सुप्रेम प्रवीना ॥ २०५ ॥ कौन कुदिन जनम्यो मन पाजी। उपजतहीं व्याकुल सबजन करि क्या पंडित क्या मुलना काजी ॥ योगारूढ़ मूढ़ ममता वश लाय हरष हिय साजी। ज्ञानिन गहरुगरूर धूर करि हरत ध्यान धुनि ताजी ॥ सदा स्वतंत्र यंत्र नहिं मानत कठिन कल्पना राजी । रन सन्मुख नहिं जुरत बीर कोउ कायर कहौं कहां जी ॥ हारे अमित उपाय दाय रचि पचि तव पाय पराजी। युगलानन्य शरन सीतापति शरन सु नौबति बाजी ॥ २०६ ॥ मन विकल होत अब काहे। प्रभु शरनागतहिं निवाहे ॥ संकट सोच विमोचन लोचन दिसि नहिं करत निगाहे। सरस स्वभाव श्याम सुमिरन करु परिहरु दुख दिल दाहे ॥ श्री सबरी फल अमल सकल विधि सुरुचि समेत सराहे। अगम न कछु करुना कटाक्ष छकि जौन जौन चित चाहे ॥ नैन बंद करि चलिये कुपथ तउ देत बताय सुराहे। युगल अनन्य शरन कायरपन त्यागि नाम अवगाहे ॥ २०७ ॥ गुन निधि अथाह सुख लीजे। निज रूप सहित तन भीजे ॥ पैठत कद्दा कदर्य काम कर्दम पै लाज न कीजे। मंजन पान पुनीत प्रान परिपोषन जीवन जीजे॥ महामलिन मर्कट मानसमल चपल छयो छल छीजे। अमल अमोल झलक मुक्ताफल असल मिले चित चीजे॥ युगल अनन्य शरन युगयुगलौं जसी होय जग जीजे ॥ २०८ ॥ इन्द्रिनबस आप हिरायो हिय हाय न रंचक छायो। संत समूह निदेश वेश उर सपनेहु नाहिं थिरायो ॥ चलत चलत अति कठिन कोस कबहूँ नहिं पायँ पिरायो । तृगुन ताप तापित तीनों तन दाह न मूढ़ सिरायो ॥ सियवर प्रीतम नाम न लीनो ज्ञान गँभीर गिरायो। युगल अनन्य शरन अंतक गृह जाय शरीर चिरायो ॥२०९ ॥ जगत से कौन विधि मिलिहै। दंभ दसा विकार

बिनु नहिं संग पल पलिहै ॥ काम कठिन कृशानु कोपकृपान तोहिं छलि है । बड़ी व्याध असाध मोह अछोह मथि मलि है ॥ जौन जौन बिचार उर तूं करत पथ चलि है । तौन-तौन कुराह मधि शठ सीम दुख रलिहै ॥ युगलधाम सुनाम भजु सब भांति भल भलिहै । युगल अनन्य हमेश रसिकन-सँग फल फलिहै ॥ २१० ॥ रहस रस रसिक पद गहिये । सहज सरस सुमौज पति समीप सुख लहि है ॥ जुलुम जग जंजाल जमन जमात जबर जहि है । जहर ज्वाल जवाल जम मजबूत दलदलि है ॥ विविध विषम विकार बेहद नद न वपुबहिहै । विकल अकल विहीन छीन मलीन मदमलिहै ॥ नवल नेह नवीन पीन प्रवीनता चहिहै । युगले अनन्य शरन सियबर प्रीति निबहि है ॥ २११ ॥ प्रभु गुनगाय गाय हुलसायो । जंन्मन की कुलताप महा भय सो सब सहज नशायो ॥ श्री गुरु संत अनंत कृपा बल अमल बोध प्रगटायो । माना मर्ष तर्ष तम गन भ्रम श्रम भवभान गँवायो ॥ श्री युगल अनन्य शरन सुखमाकर रहस मनोहर पायो ॥ २१२ ॥ स्वामिन सियजू शरन तुम्हारी । करुनारस भीनी सब ही विधि अद्भुत अमल बहारी ॥ मधुर मनोहर नाम व्याज जुग बदत देत मुद भारी । महानिषेद निरत जे खलगन तिनहुँ विशेषउबारी ॥ अति कोमल स्वभाव समतामय बदत वेद विद भारी । सोइ अवलंब अनन्य युगल हिय संतत सुदृढ़ बिचारी ॥ २१३ ॥ हे बल्लभ प्रिय प्रान पियारी ॥ राउर चरन कंजजीवन मम अपर न आस निहारी ॥ सब विधि विशद भलाई दश दिसि फैलिरही श्रमहारी । अगजग नेकनजर के हेरत होत विरंचि पुरारी ॥ तिहूंकाल तव करुना कटाक्ष चाहत सिय जेते जन तनुधारी ! तिन्हें मुदमोद तिन्हें नितनूतन अमल अपारी ॥ पल पल प्यास चरन

पंकज रस लीजे सुधि सुकुमारी। युगल अनन्य शरन दासी निज समुझिये प्रीति बिचारी ॥ २१४ ॥ हे प्रनतारति भंजनि सीते ॥ सर्वोंपरि सद्गुन गन मंडित सरस बिनोद विनीते। शक्कत शरन अनवद्य अभै कर प्रीतम प्रीति पुनीते ॥ विधि हरि हर बंदित पंकज पद नारदादि गुन गीते। विभव विलास विदित .र अघटित सुघटन घटन अभीते ॥ रमा उमादि निरत अरच .पद पल्लव अति अविगीते। युगल अनन्य शरन सुशीलता मृदु तम नव नव नीते ॥२१५॥ भक्त अनन्य न कोपथ वाको। जामें चलिन न सकत चतुराई चौगुन चाह चाल चितचाको ॥ व्यभिचारी चटकत पाइन ज्यों जिन सपनेहु रस रहस न झांको। स्वान समान जहां तहँ डोलत एक ठौर सुख स्वाद नसाको ॥ दुर्लभ रंग महल रघुनंदन बिना सुसंग रशिक छबि छाके। परक्षपरेश प्रेम पंकज पर फूलन हित अनन्य सविता को ॥ युगुल अनन्य शरन पावर नर क्या जाने जहँ मुनि मन थाको ॥२१६॥ अमल अनन्य भजन सत स्वादी। पगे प्रान प्रीतम पुनीत पद त्याग राग बकबादी ॥ चख्यो न सुधासार सुंदर रस तिन हिय बिषम विषय विष खांदी। भुक्ति मुक्ति अभिलाष लाष करि जानत एक रहस्य अनादी ॥ कियो न कबहुं अनन्य संग शठ छली कुविद्या असत अछादी। बकत अ.नकी तान तरक बहु बैठि महातम गाहक गादी ॥ युगल अनन्य शरन सीमा सुख सुमिरन सरस विगत परमादी ॥ २१७ ॥ बिना अनन्य स्वाद सब फीका ॥ जैसे सरस भांति व्यंजन बहु लवन रहित लागत नहिं नीका। जिमि नृप हीन सेन शोभित सिर पाग रहित सब वसन अलीका ॥ जिमि सुंदरी नासिका बिनु अरु सर सरिता बिनु वारि अजीका। जैसे विधवा बाम पुरुष बिनु गुन बिनु मनुज

अयोग अठीका ॥ दिवस बीच ज्यों चंद मंद दुति लागत विगत विलास अमीका। जैसे प्रान बिना तलफत तन अति मैं रूप दाह दुखहीका ॥ ऐसे साधन सकल विकल सम नकल विभांति विशेष तनीका। युगल अनन्य शरन रघुवर भजु त्यागु विवाद बाद कुमती का ॥ २१८ ॥ मानस मधुप अनन्य कंजकमनीय मकरंद बिलासी। छन छन छकत झुकत पल पल पर प्रीति प्रतीति प्रकासी ॥ कंटक सघन विपिन नाना मत तहँ ते सहज उदासी। अमल अशोक रैनि दिन बिकसित तेहिं शुभ सुमन नेवासी॥ गुंजत गुन गंभीर मधुर स्वर महा प्रमोद विभासी। युगल अनन्य शरन खटका तजि सजि अनन्य मत खासी ॥ २१९ ॥ रसिकन बिन को तपन बुझावै। परम पावनी गाथ बिना मल कहो कवन बहवावै ॥ मारतंड बिन प्रबल अखिल तम कैसे कौन नसावै। बिन वेदांत बोध निर्मल उर कौन यतन जन पावै॥ बिना बसे धव धाम इष्ट सुख सौंज स्वाद किमि गावै। तप साधन बिन विविध विभव जग मांझ न प्रकट लखावै ॥ ऐसेहि युगल अनन्य बिना नहिं छन छबि छावै ॥ २२० ॥ होगई मति मतवारी मेरी। मेहर मोबारक मधुर मान मय मनसिज मोहन निज हग हेरी ॥ चाल चमक चशमन में डोलत बोल न सकत ज्ञान गुन गेरी। हिय हर हार बहारदार तकि छकि जकि रही नेह निज नेरी ॥ शमला शीश ईश चित करषत वरषंत विशद विनोद घनेरी। युगल अनन्य मोहनी मूरति हेरत भई चारु रति चेरी। २२१॥ बिरहिनि निपट अघट दुख दूनी ॥ कठिन करेजे साल लाल बिनु लखि सनेह सुख सूनी। कहा होय हिय हाय गाय कर व्यंजन विविधि अलूनी ॥ जिकिरि जाहिरी जहर जान जिय दरशी दशा अजूब जनूनी। मिलन हिलन खुल खि-

लन रसिक पिय चपल नचावन नैन नखूनी। युगल अनन्य माधुरी हित हिय तरसत रहत सहत सुख ऊनी ॥ २२२ ॥ हम से किये मीत केहिहित जियरा उदासिया। मैं तेरी चेरी मन बच प्रिय तुम क्यों होत बिदेसिया ॥ तलफत बीतत रैन ऐन नित मिलत न सांचे सँदेसिया। भूलिगये नवकेलि रहस छकि निर्मोही नव रसिया ॥ युगल अनन्य शरन मेरे मन मूरति छबि सिधि बसिया ॥ २२३ ॥ रे चित चतुराई चल त्यागो। अमल अनूप अंक अनुभव पद सदृश रुचिर रंग अनुरागो ॥ स्वस्तिक कलित पीत आभा युत अंकुश श्याम सुमिरि दुख दागो। महा मधुर सुरद्रुम चिंतन करि दाह दरिद्र दीनता बागो ॥ उरधरेख अवशेष विभव मय मनन किये कुछ वस्तु न मांगो। श्री सरयू शुभ चिह्न चारु चय चिंतामनि सनेह कर लागो ॥ अरतालिसअनवद्य अलौकिक लच्छन युगल अनन्य सुरागो ॥ २२४ ॥ कहौं कौन गति मन की मीता। पौनहु ते अति चपल समल नित बरनत वेद भागवत गीता ॥ आलस मनोराज मोहादिक सुमरिन सजत राम श्री सीता। भरि भरि मैं हार्यों हरिरस गुन होय जाय पुनि पुनि इह रीता ॥ श्रुति सद्गुरु सत सीख न मानत अंतरयामिहुं ते नहिं भीता। धन्य धन्य सत भांति धन्य सोई सज्जन जो निज मन रन जीता ॥ याके संग रंग निज परिहरि अमित कलप भरमत मोहि बीता। युगल अनन्य शरन साधन तजि अब सियराम शरन जन लीता ॥ २२५ ॥ कजरी ॥ राघो मेरी दिशि देखो करि करुना नजर। इहरावरो विरह ज्वर जबर बजर ॥ प्रभु आस पास बिन तीनलोक नाग्रजर। चाहो करो जोई भावे कहा मेरो है उजर ॥ जापै परी एकबार दग भयो सो अजर। तेहिपद सद पूजत महेश निरजर॥निज शील

सतसुयश सुगुन न असर । तामे युगल अनन्य जानि कीजिये कसर ॥ २२६ ॥ काहे मृदु नवनीत चित्त कठिन ललन । केहि हेतु दुख देत लेत जियको जलन ॥ सब भांतिन अनूपरूप रहस-कलन । केते दिन लगिरहे छैल छकन छलन ॥ कोउ समय अपना ऐबते अबल बलन । दुखदारुन दरददाह दलक दलन ॥ प्रिया प्रीति परतीत पाय सुफल फलन । हिय युगल अनन्य सुख सरस चलन ॥ २२७ ॥ गुनगहि दुख दूरि करि हरिये उपाध । जामे लागे पदकंज मांझ सरस समाध ॥ नहीं मिटत उपाय किये विषम बिआध । रुजनाशक सुनाम सब कहें स्वच्छ साध ॥ मन मलिन सुभाव पलपल युत आध । अब द्रवहु दयाल हग करुना अगाध ॥ तब युगल अनन्य उर अजर अबाध ॥ २२८ ॥ अन्य-रीत ॥ करो मननेह नजर गुजरान । जहां महामुद मौज निरंतर रहित जमीं असमान ॥ तृगुन रहित परपंच पंजवपु जगत जलूस न मान । जप तप ध्यान ज्ञान नानामत फुरत न जहँ सनमान ॥ बाद बिबाद विषाद याद भव भासत रंचन आन । सरस शोक पंकज बिकास तर सरसत सौरभखान ॥ लेख अलेख वेषबानी बहु जहां न वेदपुरान । महरम जनजाने इहरस मगनी रस कुपथ भुलान ॥ बिना बिचारे वस्तु विमल उर उदै न प्रीतम शान । न वधा भेद भावना नामत जहां सुगुन गनगान ॥ युगल अनन्य शरन केवल तहँ केलि परत्त्व प्रधान ॥ २२९ ॥ सुमिरन तजि जनि जाय कतहुँ मन । बैठि एकांत रहो अपने घर सहज सुसेज सजाय ॥ सूरति सुभग सोहाग भरी तिय तेहि सँग रंग रँगाय । उमगत अमल तरंग सुधानिधि नाम निरखि हरषाय ॥ प्याला प्रीति प्रतीति पियतरहु बे विश्वास बहाय । देखो जन्म अनेक कठिन दुख जहँ तहँ गोता खाय ॥ मनोराज सुखसाज त्रिभव सब

सपन सदृश न सोहाय। अचल अमल थलबास रचिये भलअकल सकल समुझाय ॥ युगल अनन्य शरन थोरेंहि दिन मांझ स्वरूप लखाय ॥ २३० ॥ चित धरु नित रहस निरालियाँ हो। भूलिहुँ जनि परसे और हित न प्रीतम प्रीति प्रनालियां ॥ अहनिशि एक समान अनूपम झल झलात उजियालियाँ। दूरिहिते संकित रहु लखि जकि कायर कुमति कसालियाँ ॥ माया मोह न शके मोहि तब जब परिहरि जगजालियाँ। नामरूप अभिराम बिना सब साधन सिद्ध उछालियाँ ॥ युगल अनन्य शरन सिय पिय प्रिय कृपा सींचि प्रति पालियाँ ॥ २३१ ॥ मनभजु नित सिय सुकुमारियाहो। जिनकी कृपाकटाक्ष कामतरु कोटिन अभिमत धारियाँ ॥ जासु सुभाव सुशील सोहावन सुमिरत स्वाद सुधारियाँ। सप्त प्रबन्ध सुयश स्वामिनि सब लोक शोक तम तारियाँ ॥ शेषमहेश गिरा गनपति गुरु गौरी सुगुन उचारियाँ। युगल अनन्य शरनकी सब विधि जीवन प्रीतम प्यारियाँ ॥ २३२ ॥ मोहि मिलिये मेहर करि हियरे लगाय। बिन देखे दरश न छन छन अकुलाय ॥ सुनि सुनि रूप नाम गुन चित्त ललचाय। काहे करत कठोरपन प्रीतिहीं लखाय ॥ नवनीतहुँ से कोमल कहत श्रुति गाय। यह रहस बिचारि के अनन्य हियहाय ॥ २३३ ॥ चखि चखि रसरंग स्वाद प्रेम परसाय। छबि छकन बिहीन कहूं सुख सरसाय ॥ मृदु मधुर वचन.मकरन्द बीचनहाय। दिलदाग दुर्मति मल मानस नसाय ॥ जप तप व्रतनेम कछू चित न सोहाय। मिले युगल अनन्य जिय तपन बुझाय ॥ २३४ ॥ सखि सावन सरस सिय पिय बिन जाय। कोउ राघव सुजानसों सुधि न सुनाय ॥ पिय प्यारी सजि साज संग सजन सोहाय। झूलें झमक हिंडोल लखि तन तरसाय ॥ कुलतीय पीय प्यार बिन कित कहँ जाय। याही हेतु

हिय बूझि जिय युगल जुड़ाय ॥ २३५ ॥ सखि श्याम बदरिया बरषे। बरबस रसिकन मन करषे ॥ सिय पिय जिय जीवन जग मग अँग निरखि निरखि हिय हरषे। पल पल प्यास प्रान प्रीतम छबि प्रीति रहस रस परषे ॥ युगल उमंग अनंग रंग सुख सहज सरस सुख तरषे। युगल अनन्य शरन धीरज बिन ध्यान धारि धिय धरषे ॥ २३६ ॥ सखि नींद नहीं निशि आवे। चितचपला चमकि चलावे ॥ गरजि गरजि घनघोर सोर बहु विह्वलकरि डरपावे। वरषत धारहार मुक्ता सम प्रीतम बिन दुखछावे ॥ सरसरिता बढ़ि रही चहूंदिशि कोउ न सँदेश सुनावे। युगल अनन्य शरन घायल दिल मायल विकल करावे ॥ २३७ ॥ वरषत बुन्द विरह बरबारी। करकत करक करेजो कामिनि कहि न सकत हिय हारी ॥ गरजि गरजि गरबी गांहक जिय जारत जस डर डारी। चहुँदिशि चमचमात वैरिनि यह मदन कृपा न करारी ॥ मान मरोर लिये मादक छकि मन्द मयूर पुकारी। जहँ तहँ छाय रहे दुख दायक विरहिनि एक बिचारी ॥ युगल अनन्य शरन सिय पिय बिनु वेदन अकथ अपारी ॥ २३८ ॥ वरषा ऋतु रस बरसावे। विरहिनि हिय हाय बसावे ॥ पल पल पिय मृदु मधुर मोहनी मूरति हित ललचावे। मन्द गरजि गुनगान करत बादरमिस जस प्रकटावे ॥ चपला चमकि देखाय दाहदिल दूनो दरद दिखावे। युगल अनन्य शरन सिय पिय छबि छटा छला बछरावे ॥ २३९ ॥ पिय और सुरतिया लागी। अवन सोहात सदन सजनी ॥ उठत उमंग रंग अन्तर उर दरश चाह चित जागी। बिसरी भाव चाव चरचा चल अचल दरद दिलदागी ॥ युगल अनन्य शरन सिय बल्लभ मेंटिये छबि अनुरागी ॥ २४० ॥ बहु दिन बीते सुधिपाये। नवनेह मेह झरलाये ॥ बहत विरह बरबात

घात सम विद्युलता दरशाये। सुरपति धनु उर उदित मदन चित चौगुन चाप चढ़ाये॥ चातक रसनि रटनि पियपिय धुनि ध्यानज्ञान बिसराये। युगलअनन्य शरन नाचत मन मधुर मयूर रमाये २४१ सखि श्याम सजन निरमोही। कबहूं नहिं दृग भरि जोही॥ गावत-गीत गरूर गुनन युत अति अद्‌भुत दिल द्रोही। परम पियूष सहस गुनपूरन बोलत वचन अकोही॥ औरन तन चितवत हितवत बहुप्यार बढ़ावत मोही। युगल अनन्य शरन तरसावत कौन सुभाव सजोही॥ २४२॥ बिन दरश परश सुख कैसे। धनहीन मनोरथ जैसे॥ सुनि सुनि श्रवन सुगुन सुन्दर बर उर अकुलात अवैसे। रुचत न चित चरचा सजनी सुख दुखसम सहस सुरैसे॥ सांची लगन लाललल चत इहजानि परत हियलैसे। युगल अनन्य शरन नेही की सुधि कछु करिय समैसे॥ २४३॥ बाद विवाद बकत दिन बीतत। श्री सीतापति नाम सुधारस चाखत नहिं नाहक सठसीदत॥ दुर्लभतन त्रैताप निवारक तेहिलखि छारशीशपर छीटत। करुनासिंधु सुबंधु दयानिधि तेहि न भजत छाती जड़ पीटत॥ परम उदार सार सुखमासर त्यागि रागि-नीरस सुख ईड़त। युगल अनन्य शरन सरयूतट सपनेहुँ प्रेम समेत न क्रीड़त॥ २४४॥ प्रानपति भेंटे कौनी भांति। जानि न जाय जान जीवन गति रहत यही हियभांति॥ मन मातो मनसिज मदिरा मुद छन न लहत समशांति। युगल अनन्य शरन झलक किमि श्याममनोहर कांति॥ २४५॥ राजन सुख राई मिलि है मीत। सोउ दिन दुति दायक है है कहुँ उदय होय पर प्रीत॥ मिटि है मोह द्रोह नानापथ कारन मन बिपरीत। युगल अनन्य सुमन सीताबर रमिहै नाम पुनीत॥२४६। अन्यरीति॥ कहां उह सखुन रंगीनी। कहां इह सखत संगीनी॥ कहां मन

मौज गुलजारा । कहां इह जगत का भारा ॥ कहां वह इस्कका गुलशन । कहां इह खार बे रोशन ॥ कहां वह यार की यारी । कहां इह नेह की ख्वारी ॥ कहां वह रंग नवनंगी । कहां इह धूर चितभंगी ॥ कहां वह शौक की बातैं । कहां इह तुच्छ जगघातैं ॥ कहां उस धाम का रहना । कहां इह कुटी दुख सहना ॥ कहां उह चितवनी प्यारी । कहां इह चाह चितभारी ॥ कहां वह बैठना बेहोशवारी । कहां इह सुधि औ बुधि की यादगारी ॥ कहां उह प्रेमका पीना ॥ कहां इह विषय विषभीना । कहां उहझूलना रंगसे हिंडोले॥ कहां इह झूलना दुनियों के झूले । कहां उहनेह के निरनय को सुनना । कहां इहबेदकी बातोंको गुनना ॥ कहां उहचाल प्रीतिवारी प्यारी । कहां इहचलन नाकिस खेदखारी ॥ कहां उह दरश की परप्यास खासी । कहां इसतरफकीं खाहिश बलासी ॥ इसीही तरह कहकहके पुकारा । दोदस्तों को सिरोंपर देकेमारा ॥ युगल तेरा तूं मेरा बेखटकहै । जहां परतीतहै वां क्या अटकहै॥ २४७॥ अबसके रामनामसें लागीहै दोस्ती । झुकताहै उसीजोशमें मानिंद पोस्ती ॥ फिरगई मेरे तरफ सेंती निगाह । खूबसा उनकी लखी हमने सुराह ॥ अयदिल पसंद हमको खुश रंगहै सुइहहै । हरदम खुशी आजूबा मन मौज है सुइह है ॥ रस भरीमूरति सुप्यारी सांवरी । जिसे लखि के आवती है झांवरी ॥ आप मेरेजान प्रीतम प्रान है । युग्म तेरेही पै नित कुर्बानहै ॥ २४८ ॥ खुश न लगती यार बिन दूजी कथा । कौनसें कहिये सखी अपनी व्यथा ॥ चाह मन याददार अयप्यारे । भूलता क्यों मुझे जुलुफ वारे ॥ शौकसर शार युग्म को दीजे । बासना दुनीदीन हरिलीजे ॥ २४९ ॥ ग़ज़ल ॥ श्रीजानकी बल्लभ सें मेरो नेह लगाहै नेहलगाहै सखी दृढ़प्रेम पगाहै । मुराशिदके मेहरसें हुईहासिल यही दौलत ॥ उसके सेवा

जहांन में कोई न सगाहै। सबतौर सें तहकीक किया हमने पि-
यारे ॥ मुखड़े में मोहब्बत लखा दिलबीच दगाहै। जब तक के
दिलाराम सें सोहबत न हुईथी ॥ तबहींतलक खलक के तरफ
जान जगाहै। खुशवख्त खबर यारकी पाई जिसी सायत ॥ उस
दम सें मिलन चाह चसक खूब खगाहै। आइने के मानिंद जिगर
युग्मका रौशन ॥ अफसोस जोश इस्कमें बेहोश रँगाहै ॥ २५० ॥
समुझाय चुकी मन ना माने। जिसपै पड़ी झलक छबिनिधि की
हुये इस्क में दीवाने ॥ काल कराल व्याल सें बाचे सपनेहु नहिं
डर उर आने। बिरह बीच बूड़े बिह्वल वपु विविध विकार भार भा-
ने ॥ अमल अजूब खूब सीता बर पीवत मदमन मस्ताने। खूबी
मधुर मिजाज मोबारक मानस स्वादी सुखसाने ॥ युगल अनन्य
शरन खुसखरी बाजत शाहन शाहाने ॥ २५१ ॥ लावनी ॥ संत
को कोह नहीं चहिये। जो कोउ आनि कहै कटुतर तउ मौन
धारि सहिये ॥ क्रोधते बस्तु विमलनासे। जीवजहान जिते तिन
को इह भेद न कछु भासे ॥ महा मुनि मनन ध्यानपूरे। भये को-
हबस हृदय हारि तम तरुन तार तूरे ॥ वचन पौरुखन कढ़नदी
जे। जो कोउ आय कहै केतनो पर गुन निकारि लीजे ॥ सीख
सुनिये मेरीप्यारे। युगल अनन्य शरन अकोह चित भजुसिय बर
बारो ॥ २५२ मजा तब दोस्ती काहै नजर हरएक तरफ आवै।
न भावै जान बिन दूजा वही दरदिल सुधाप्यावै ॥ हमारे चश्म का
तर आबदर कूवे तो अय जालिम। गिरेगुल होय सो प्यारा गहै
मन मौज मतवारा ॥ वेदह दुशनाम शीरीनी। दोआदानम मे-
हरभीनी ॥ इसीसे जिंदगी मेरी। फरामोशीन होतेरी ॥ हमेशे
खैर खूबीसें। बसो मेरे जिगर अन्दर युगल अनन्य है आशक।
तुहीं सबतौर से सुन्दर ॥ २५३ ॥ हौंतो प्यारे बिकगई तेरे

हाथ । तुम प्रीतम सर्वसजीवन धन मीन ज्यों जीवन पाथ ॥ चौ-
पद ज्यों बरकनिक सुकर बिच जिमि मनरुचि तिमिनाथ । सांची
कहत न झूठ रचहूं नहीं कोऊ दूजो साथ ॥ युगल अनन्य शरन
मन पन करिगावैगी गुनगन गाथ ॥ २५४ ॥ पियामें सुरतिया भई
मोरी लीनी । इधर उधर घर खबर भुलानी सुन्यो शब्द शुठि
झीनी ॥ कारिख कपट कलंक काम कुल कायर पन तजि दीनी ।
अब कुछ कमी गमी न जमी चित चितवन चाह नवीनी ॥ पिय
पावन की आस खास दिल हिलमिलि मौज रँगीनी । युगल अ-
नन्य शरन तेरेपर अकल नेछावर कीनी ॥ २५५ ॥ निडर जन
हूजे प्रीतम मोरे । बालापन तन अतन सतावत बारबार मोहि
भूंजे ॥ जागत सोवत रोवत जोवत आस हमारी पूजे । आह दाह
उरउठत चाह हित तीनों तनतक सूजे ॥ युगलअनन्य अलीतेरी
अब नहिं तकिहै दरदूजे ॥ २५६ ॥ कवन विधि मिलिहौ प्रीतम
मोको । साधन सजग सचेत नहीं कोई केहि कारन हियखिलिहौ ॥
आपनि दिशि हगदेखि दयानिधि मममानस रस रलिहौ । युगल
अनन्य शरन अतिहित नुतजीवन जिय पनपालिहौ ॥ २५७ ॥
टप्पा ॥ मैंतो तैंडेसदके जांदी भुल्लना न यार वे मैनू । युगल अ-
नन्य अली गरज अरजमैंडी वे मानिले राजकुमारवें ॥ २५८ ॥
छोड़ना न यार वे मैंतो तैडे रामारँग भीनेप्यारे । युगल अनन्य अली
तेरे हाथ बिकिगई यौंवेकठिन करे जडे घावने ॥ २५९ ॥ खड़ीहौं
तेरे आगे जालिम प्यारे । तूं बेदरदी दरद नहिं बूझै नाइक हमकहँ
त्यागे ॥ कोहै और सहायक मेरो निज सुख में सबपागे । युगल
अनन्य नींदनैनन नहिं हायभरी निजजागे ॥ २६० ॥ करम कब
करिहौ करुनाकारी । कुलकलमख कामक कटु संकज कुशल कला
कि प्यारी ॥ कीमत कौनकहै कुदरतकी करामात कटुकारी । युगल

अनन्य किंकरी कायम कीजिये कलित करारी ॥ २६१ ॥ टप्पा
प्यारी प्यारवे सुखसरसादीं मैनू ॥ रावरंक सम विषम नेक नहिं
नित नवनेह बहारी । युगल अनन्य शरन साबित चित हित हर-
दम होसियारी ॥ २६२ ॥ अवधबिहारी थारी तारी लागीवे ॥
छुटदी नहीं छुडंदाय षुके कुलकठिन करेजे कारी । युगल अनन्य
अली चरनन पर बारबार बलिहारी ॥ २६३ ॥ अन्यरीति ॥ सरस
सरयूके किनारे बसो ॥ रंगरसपाय स्वाद सरसाय सिय पियप्यारे
स्नेहित चित धारेजी तन कसन मुख दृढ़कमर कसो । युगल अ-
नन्य तुझे बे कहत पुकारे यारे सुनत सुखसार मिटत मदमार होय
होसियार न दरदधसो ॥ २६४ ॥ भजन बिन बीते सो कैसे घड़ी ॥
समुझि श्रुति संत वचन सुखवंत मिले सियकंत सुजीवन जड़ी ।
दुर्लभ रतन बे पायन चेततं बौरे लहोगे दुख अंतबिसरि सब
तंत उपाधि बड़ी ॥ युगल अनन्य अली बे सुमिरन साजत प्यारे
एंकरस रोज विगत श्रमसो जमु नौबतझड़ी ॥ २६५ ॥ अन्यरी-
ति ॥ अब हम इसक दिवाने हूवे । मतमतांत भवभ्रांत शांतकरि
डारिदियो तमकूंवे ॥ पारस परम प्रीति प्रीतम पद पाय कांचको
छूवे । सियवर गुरुकल कृपा जीति चित फेरि हारि नहिं जूवे ॥
जग दुर्गंध बंध जान्यो मनमान्यो सुख खुशबूवे । युगल अनन्य
शरन रस जस बिनु जनमि जड़मूवे ॥ २६६ ॥ सीताराम भजत
सुख है हे। नाहितो कल्पकरोर कामबस जहँ तहँ तू शठरोवैहै ॥
दुर्लभ तन संतनकी संगति करत प्रमादहि खोहै । तो सहजेही
समाध नींद मैं आठयाम सुख स्वैहै ॥ वामावित सुत दुख दारुन
मद जो इनको मुख जैहै । युगल अनन्य शरन सबही विधि कलि
कृत दोष न ध्वैहै ॥ २६७ ॥ लागीरे जिकर दिल जनियां ॥ दूजो
सखुन जहर सम सहजहिं पागीरे प्रीतिपति पनियां । युगल

अनन्य शरन भूलतछन नाहिन हो मधुर मुशकनियां ॥ २६८ ॥ सियबर सुगुन गायहुलसैहो । लोक वेद मतबाद अमित मुदमन मथ रुचि झुलसैहो ॥ रचिराचि सुचि सनेह सुमनन की माललाल पहिरैहों । युगल अनन्य अनूप रूप मनिमुकुर सुदिल दरसैहों ॥ २६९॥ हमारे हिय बासिये सियराम । सुन्दर सेज सँवारि शोक सुमनित नवछबि अभिराम ॥ चंचलता चित चाहदाह गुनगये सब दुरि मन काम । युगल अनन्य अली अवलोकि ये निज दिसि लखि बसुयाम ॥ २७० ॥ सरयूतट बास सजावो । निज नेह निशान बजावो ॥ लखि ललना लोभ लजावो । गुरु संतन शरन सजावो ॥ दृगजात रंग रुचि लावो । इत उत की कुमति धोलावो ॥ सियश्याम सनेह समावो । गुननाम निरंतर गावो ॥ चित चोरन रूपहि ध्यावो । मत परमानन्द सोहावो ॥ बहुबाद बिखाद तजावो । समता सुख शहरहिं जावो ॥ नहिं अनत अनन्य लोभावो ॥ २७१ ॥ कैसे भीजे हमारा हियरा । प्रभु प्रतिकूल क्रिया करनी मम होयरह्यो रातम तियरा ॥ श्रुति सम्मत सुखधाम रामघन श्याम निरंतर नियरा । दरश परश बिन हाय बढ़त नित अथिर अधिक दिल दियरा ॥ शरनागत पालक पन प्रियतम बैन ऐन सुद सियरा । युगलअनन्य बिना पाये पति बपुखरंग अति पियरा ॥ २७२ ॥ ऐसे है हैं सुमनथिर हमरा ॥ निरखिये नाह नैन करुनाकरि पुनि न चापिहै चमरा । शील निशांन न ढोल लगाइये है भरोस नहिं दमरा ॥ उदित प्रताप भानुकीजे जिय रहि न सके तिलतमरा । संत समंत प्रशंसत प्रभु गुन दमन मोह मद ममरा ॥ युगल अनन्य शरन सीतापति आस खास सुख समरा ॥ २७३ ॥ मेरे धन सर्वस श्री रामायन । जिनके श्रवन सकृत के कीन्हे प्रियपद पर पारायन ॥ युगल किशोर स्वरूप मा-

धुरी रस जस रहस सुधायन। तारन तरन करन सुबरन बर बरन हरन भवभायन ॥ निगमागम पुरान जीवन धनं रसिकन सुख दरशायन। कोटिन कलप कठिन पातक तम नासन हित दुति दायन ॥ निज पररूप अनूप प्रकाशन अमल मोद मुदितायन। शिव सुकशेश गनेश शारदा विधि हरिहर गुनगायन ॥ युगल अनन्य शरन पूजत जेहि निशिदिन नर नारायन॥२७४॥ काहे प्रिय हो बिसारी सुधि मोरी। हौं तौ सकल भांति से छन छन प्रीतम हो चरन रजतोरी ॥ सरल सुभाव सकल सुख सौपन सुनिये हो रमन रँगबोरी। युगल अनन्य शरन विरहिनि की केहि हित हो छोह अबछोरी ॥ २७५ ॥ दीन हितहौं पापीखल मूंजी। तपसी सम पाखंड स्वांग साजि विषय अनल मति भूंजी ॥ मत्सरता ईर्षा दुरमति मद दंड मेखला मूंजी। बैन समै न उचारि विपुल सोइ श्रुति नरिचागुत्त गूंजी ॥ मोह विपिनि बिच बसो निरंतर सुरुचि विमुखता पूंजी। युगल अनन्य शरन सीतावर राखिये लखि गति लूंजी ॥ २७६ ॥ करौं मैं कौन भांति तोसे चोरी ॥ नितहीं निकटनिवास किये प्रभुअन्तर बाहरखोरी। प्रथम संकलप करनी कारन सूक्षम समुझि परोरी ॥ ताहूते तुप आदि निखिल विद अनुभव वेद खरोरी। काहू की कछु शक्ति चलत नहिं ताते जीय डरोरी ॥ विरुद विचित्र विलोकि आपनो भावै तौन करोरी। मैं मतिमंद द्वंद दारुन पथ बारहि बार चरोरी ॥ युगल अनन्य शरन अपनाइये अब जनि जनहिं छरोरी ॥ २७७ ॥ लागि गई दिल में हमारे लगनियां। प्रीतम पद पेखन पलपल रुचि बुझि गई बिरस अगिनियां ॥ अब काहूसे संग न भावत समुझत मरम ठगिनियां। युगल अनन्य शरन रामहि रमि मिलिहै मौज मगनियां ॥ २७८ ॥ आपुहि से भूलो अपनपौ ॥ जैसे सपन मांझ भू-

पति दुखपाय सह्यो सिरसूलो । आसा भ्रम हिय होत आनहग भाषत हग प्रतिकूलो ॥ जैसे निज प्रतिबिम्ब मुकुर मधि निरखि मूढ़ माति फूलो । कहे कहाये नफानेकु नहिं छांकि रहु सुगुन अमूलो । युगल अनन्य शरन सीतावर सुमिरत सुख अनुकूलो ॥ २७९ ॥ तिहारो रूप सबनते न्यारो ॥ जहां न पहुँचि सकत नानामत मति गति बिपुल विचारो । परम प्रकाशमान अविचल प्रभु परतम अंस उज्यारो ॥ विनाविवेक विगोवत निज सुख सरसानंद सँवारो । अज अव्यक्त अनादि अनूपम स्वामी सरस सम्हारो ॥ युगल अनन्य शरन बानी बहु बकन विकार बिसारो ॥ २८० ॥ समुझि मन सहज समाधि लगावो । सब संघात समेटि भली विधि चित रुचि विफल बहावो ॥ विश्व विहार विकार लखो जनि युगल स्वरूप समावो । गुनागार सुखसार नामरमि अनुपमरस सरसावो ॥ विपुल वासना भूलशूल प्रतिकूल दुकूल जलावो । वादविवाद विषाद असत गुनि गुनन गरूर गवावो ॥ युगल अनन्य सुधाम अवधि बसि नौबत नेह बजावो ॥ २८१ ॥ कैसेहुँ इह मन बहन न दीजे । छनछन नैन निहारत रहिये तब अवश्य शठ छीजे ॥ जिमिबामा घटनट लोभी धन कामीतिय रसभीजे । कमठ अंड गोवत्स सुरतिकरु पलभरि नाहि पतीजे ॥ भेषसमान समुझु पकीगति मरिमरि पुनिपुनि जीजे । सावधान संतसंग सुमरहै अडिगन पीछा लीजे ॥ युगलानन्य शरन सचेत रहि नाम रसायन पीजे ॥ २८२ ॥ रहत नहिं रोके इहमन लोल । सुखद सोहावन सीख देततउ पलनहिं रहत अडोल ॥ झूलत रहत एकरस सुदयुत विषय विकल्प हिडोल । साधन साध्य सुरति राखत नहिं अंत रंग गति पोल ॥ जानिबूझि छोड़त छवि रसनिधि चिंतामनि अनमोल । आलस सजत बीन धुनिसुनि मन सुनत मोह

बसे रंव कटुकोल ॥ युगलअनन्य शरन नामहिबल ह्वैहै चित्त अ-
तोल ॥ २८३ ॥ बिना मनमारे मोजनमीत । जबलगि रिपु गन
नासहोत नहिं तौलौ नाहिं यथारथजीत ॥ अंतरंग साधन सनेह
बिन पांवत मोदन बाहरगीत । श्रुति संमत संतनको मत साचि-
हूजे त्रिविधि बिनीत ॥ कुपिनि कुपंथि कुचाल कटुक प्रिय संग
हमेश त्यागु विपरीत । सुख संसार असार अथिर अति ज्यों बारू
की भीत ॥ युगल अनन्य शरन सचेत चित कीजे सबविधि नाम
प्रतींत ॥ २८४ ॥

इति श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्रीमान् महराजाधिराज श्रीरशिकेश
शिरोमनि मृदुलचित कृपा अवतार श्री मद्युगलानन्यशरन
विराचिता श्री सुखरूप पदावली संपूर्णम् ॥

दो०-जेठ मास तमपक्ष तिथि चौदशि सरयू तीर ।
सम्वत् शत उन्नीसपर नव विंसति लखुधीर ॥
लेखनीय येहिग्रंथ को राम बल्लभाशरन ।
श्री सत्तगुरु पग त्रानके रजआश्रिततम हरन ॥

श्रीरामानुज कोटे शुभ मस्तु ।